RIHR

DASHAM
ALLIANCE FOR CHILD RIGHTS

unicef
for every child

रिसोर्स इंस्टिट्यूट फॉर ह्यूमन राइट्स, राजस्थान

मेरी रचना
कितनी सुंदर

संदर्भ व्यक्ति व मुख्य प्रशिक्षक
डॉ ताबीनाह अंजुम
(वरिष्ठ पत्रकार, दृश्य कथाकार)

मार्गदर्शन एवं परिकल्पना
अंकुश सिंह, यूनिसेफ, राजस्थान
विजय गोयल,
रिसर्च इंस्टिट्यूट फॉर ह्यूमन राइट्स (आर.आई.एच.आर)

संपादक
मनीष सिंह
मंजरी संस्थान, बूंदी

सहयोग

इंदिरा पंचोली	महिला जन अधिकार समिति।
सुशीला ओजा	उरमूल सीमांत समिति, बज्जू, बीकानेर।
योगेश वैष्णव	विकल्प संस्थान, उदयपुर।
मुरारी थानवी	दूसरा दशक परियोजना, बाप, फलौदी जोधपुर।
रिचा औदिच्य	जन चेतना संस्थान, आबू रोड सिरोही।
शकुन्तला पामेचा	राज समन्द जन विकास संस्थान।
डा. शैलेन्द्र पाण्ड्या	गायत्री सेवा संस्थान, उदयपुर
शिवजी राम यादव	शिव शिक्षा समिति रानोली, टोंक।
नूर मोहम्मद	अलवर मेवात शिक्षा एंव विकास संस्थान, अलवर।
विकास भारद्वाज	डांग विकास संस्थान, करौली।

विश्लेषण एवं लेखन
कौमुदी - दशम एलाइंस
तरूणा - स्नेह आंगन
साथ में, विभिन्न संस्थाओं के बच्चे

राजस्थान बाल अधिकार संरक्षण साझा अभियान के द्वारा
यूनिसेफ के सहयोग से आर.आई.एच.आर. के माध्यम से प्रसारित

संपादक की कलम से...

कोविड 19 की महामारी ने हम सबकी जिंदगी को और जीवन के हर पहलू को बुरी तरह प्रभावित किया है।

बहरहाल, बच्चों की अपनी अनोखी दुनियां होती है। हताशा और निराशा के इस लम्बे दौर में भी बच्चों ने अपनी इस दुनियां के रंगों को फीका नहीं पड़ने दिया... अपनी उर्जा और रचनात्मकता से इसे हमेशा जीवंत बनाए रखा।

राजस्थान बाल संरक्षण साझा अभियान अपनी सहयोगी संस्थाओं के साथ इस पूरे दौर में बच्चों को अभिव्यक्ति के अवसर देने हेतु विभिन्न कार्यक्रमों का संयोजन किया। इसी क्रम में, तस्वीरों के माध्यम से कहानी कहने की कला पर, प्रषिक्षणों की एक पूरी श्रृंखला आयोजित की गई। ये कार्यशालाएं 5 दिवसीय थीं और कुल 5 कार्यशालाएं आयोजित की गई। इनमें 17 जिलों की 22 सहयोगी संस्थाओं से 187 बच्चों ने भागीदारी की।

बच्चों ने छायाचित्रों के ज़रिये अपनी आस पास की दुनियां में झांका और उन्हें जो भी दिखा उसे उकेर दिया और अपने षब्द दिए।

छायाचित्र, तस्वीरें, कविता, कहानी.. इस सारी विधाओं को अपना माध्यम बनाया.!

यह पुस्तिका बच्चों की इन्ही अभिव्यक्तियों का संकलन है.. आइए इनसे गुजरे, इन्हें महसूस करें और इनके रंग में रंगे...!!

आभार सहित,
अभियान दल के साथी

कार्यशाला एक नज़र में

डॉ ताबीनाह अंजुम
(वरिष्ठ पत्रकार, दृश्य कथाकार)

महामारी की दूसरी लहर में, जब हर व्यक्ति अपने घरों में कैद था, हम भी। तब हमें यूनिसेफ के सहयोग से राजस्थान के कई जिलों में स्कूली शिक्षा के अभाव में रह रहे लगभग 185 बच्चों से आन-लाइन माध्यम से जुड़ने का अवसर मिला। इस कठिन समय में, पांच दृश्य कहानी कार्यशालाओं के माध्यम से, राजस्थान भर के बालक बालिकाओं ने भाग लिया और रचनात्मक लेखन और तस्वीरों की एक श्रृंखला के माध्यम से महामारी के प्रभाव और अपने विचार व्यक्त किए।

कार्यशाला का उद्देश्य प्रतिभागियों को कहानी कहने की उनकी स्वाभाविक क्षमता दिखाना और उन्हें याद दिलाना था। कार्यशाला की आत्मा कल्पना थी और प्रतिभागियों ने फोटोग्राफी और लेखन के माध्यम से इस कला का अभ्यास किया। छोटे छोटे अभ्यासों की एक श्रृंखला के माध्यम से, नए कथाकारों को एक विचार को पहचानने, एक भावना को महसूस करने और तस्वीरों की एक श्रृंखला, रेखाचित्र और साथ में पाठ के माध्यम से एक कहानी सुनाने की बारीकियों से परिचित कराया गया। इन माध्यमों से उन्हें विचारों की अभिव्यक्ति की प्रक्रिया से अवगत कराया गया।

राजस्थान के 17 जिलों जैसे अजमेर, अलवर, बारां, बीकानेर, बूंदी, दौसा, श्री गंगानगर, हनुमानगढ़, जयपुर, झुंझुनू, जोधपुर, करौली, पाली, प्रतापगढ़, राजसमंद, टोंक, उदयपुर से लगभग 185 बच्चों ने भाग लिया। ये सभी संस्थाएं राजस्थान बाल अधिकार संरक्षण साझा अभियान की सहयोगी सस्थाएं थी। दिलचस्प बात यह है कि इसमें लगभग 70 प्रतिशत बालिकाएं थी। राजस्थान के दूरस्थ, वंचित, आदिवासी और रेगिस्तानी इलाकों के 8 साल से 18 साल तक के बच्चे हमसे जुड़ पाए।

उन्हें केवल एक मोबाइल फोन/एक लैपटॉप/नोटबुक, स्केचबुक, स्टेशनरी और एक कैमरा या दृश्य दर्शाने के लिए एक उपकरण की आवश्यकता थी। हमने डिजिटल डिवाइस की अनुपलब्धता और दुर्गम शिक्षा को ध्यान में रखते हुए अपने पाठ्यक्रम को तैयार किया। यह सभी तस्वीरें उनके मोबाइल फोन से ली गई हैं क्योंकि उनमें से किसी के पास उचित कैमरा नहीं है। लेकिन उन्होंने कला को बहुत जल्दी समझा और उसे हमारे साथ साझा किया।

इस पुस्तक में प्रकाशित लघु काल्पनिक कथाओं या कविताओं के साथ फोटो, कहानियां हैं जो लॉकडाउन के दौरान बच्चों के कई अनुभवों को बताने वाली व्यक्तिगत कहानी को चित्रित करती हैं। उनकी कहानियों और चलती तस्वीरों ने स्कूल की अनुपस्थिति में मानसिक तनाव, अपने दोस्तों की कमी, परिवारों में आर्थिक मंदी, अलगाव, मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दों, अनिश्चितता, उचित शिक्षा की कमी, लड़कियों के घर में बंद हो जाने और घर के कामों में अधिक लगे रहने के अनुभव को बयां किया। कुछ कहानियों में भाई-बहनों के बीच बढ़ते बंधन, पर्यावरण, पक्षियों और पालतू जानवरों की चिंता, खेतों में बड़ों की मदद करना और दादा-दादी की देखभाल करना भी दर्शाया गया है। दिलचस्प बात यह है कि प्रतिभागियों ने कोविड -19 के दौरान जागरूकता पैदा करने के लिए नए सीखे गए कौशल का भी इस्तेमाल किया।

अनुक्रमणिका

शिक्षा	01
मानव/जीवन	26
गतिविधियाँ	70
प्रकृति/पर्यावरण	100
कार्यशाला में प्रतिभागी बच्चों के नाम की सूची	131

शिक्षा

स्कूल के बिना जीवन कैसा है?

संजीता रोजाना सुबह नहा-धोकर अपनी मम्मी से दो चोटी बनवा कर और पूजा कर स्कूल के लिए तैयार होती थी। उसके बाद वह अपना स्कूल बैग जमाती, नाश्ता करती और उसकी मम्मी टिफिन तैयार करके उसे देती थी, संजीता स्कूल बैग लेकर अपनी साइकिल से रोज स्कूल जाया करती थी। देर ना हो जाए इसलिए वह जल्दी-जल्दी घर से निकल जाती और कभी टिफिन घर पर ही भूल जाती तब उसके पापा उसे स्कूल में टिफिन देने आते थे।

संजीता जब स्कूल जाती तब वह रास्ते में वाहनों को आते-जाते देखती, लोगों को इधर से उधर जाते, वॉक करते और जूस निकालने वाले ठैले के पास खडे लोगो को जूस पीते हुए देखती। इस प्रकार संजीता अपने स्कूल पहुंच जाती थी।

जहां वह अपने दोस्तों से मिलती उनसे बातें करती और आगे बैठने के लिए वह जिद करती और हमेशा आगे बैठती थी। लंच में रंजीता अपने दोस्तों के साथ खेलती और एक दूसरे से सवाल भी पूछा करती थी।

संजीता जब अपनी दोस्त सोनम से कहती की चलो खेलते हैं तो वह कहती कि मुझे भागना नहीं आता, मैं नहीं खेल रही, फिर भी रंजीता और उसकी सहेली उसे खेलने के लिए राजी कर लेती थी और फिर वे सब खेलतीं और मस्ती किया करती थीं।

छुट्टी के समय वह अपनी साइकिल से घर आ जाती थी। कभी-कभी उसे रास्ते में अपने दोस्त भी मिल जाते थे तब वह उनके साथ बातें करती हुई घर जाती थी और उसे पता भी नहीं चलता कि वह कब घर पहुंच गए।

(उसी दौरान कोरोना महामारी के कारण सम्पूर्ण देश में लॉकडाउन लग चुका था)

जिस कारण संजीता अपने स्कूल नहीं जा पा रही। रंजीता बहुत उदास रहती है और उसे अपने दोस्तों की, उन सवालों को जो वे एक-दूसरे से पूछती थी और स्कूल की भी बहुत याद आती है। संजीता अब सोचती है कि कब ये महामारी खत्म हो और कब स्कूल खुलें, अपने दोस्तों से मिलें।

संजीता प्रजापत

सपनों की दुनियां

एक समय की बात है- एक गांव में बबीता नाम की महिला रहती थी। बबीता के परिवार में उसके सास, ससुर, पति रहते थे। कुछ समय बाद बबीता के घर एक लड़की ने जन्म लिया जिसका नाम उन्होंने ज्ञानवती रखा। बबीता का पति रोज कमाने एक कम्पनी में जाता था और बबीता का परिवार कभी-कभी गांव में घूमने जाते थे। बबीता को पशु-पक्षी, हरे-भरे पेड़-पौधे देखना पसंद था। बबीता के परिवार की जिंदगी बहुत अच्छी चल रही थी।

मार्च महिने में एक दिन समाचार द्वारा पता चला कि हमारे देश में एक व्यक्ति कोरोना पॉजिटिव है। और धीरे-धीरे कोरोना मरीजों की संख्या बढ़ने लगी। और फिर सरकार ने 20 मार्च, 2020 से देश में सम्पूर्ण लॉकडाउन लगा दिया। इस वजह से लोग बेरोजगार हो गए और बबीता के पति की कम्पनी भी बंद हो गई। अब बबीता का पति भी बेरोजगार हो गया। धीरे धीरे उनकी आर्थिक स्थिति खराब हो गई और पति पत्नी के बीच विवाद होना शुरू हो गया। यह सब ज्ञानवती देखती और फिर डर कर अपने कमरे में चली जाती।

स्कूल के दिनों में ज्ञानवती डांस क्लास में जाती थी। एक दिन ज्ञानवती अलमारी की तरफ भागी और वो अपना सतरंगी रंगों का लहंगा पहनकर व तैयार होकर बाहर आई। उसने अपने पापा से कहा कि 'जल्दी चलो पापा, मैं डांस के लिए लेट हो जाऊंगी।' उसके पापा ने कहा- 'क्या..... डांस के लिए! बेटा क्या तुम्हें पता नहीं है कि पूरे देश में लॉकडाउन लगा हुआ है, हम बाहर कहीं नही जा सकते। ऐसा सुनते ही जैसे उसकी होठों की मुस्कान गायब हो गई। वो अपने कमरे में चली गई। कपड़े बदलकर उस लहंगे व उन चूड़ियों को देखकर पहले के दिन याद करने लगी कि कैसे वो सुबह जल्दी उठकर तैयार होकर सूर्य से, पक्षियों से, और हवाओं से बातें करते हुए खिलखिलाती हुई जाती और जीतकर आती। ज्ञानवती अपने टीचर, दोस्त, स्कूल सभी को बहुत याद करती। लॉकडाउन लगने से ज्ञानवती बहुत उदास होती गई। उसके पापा ने उसके पास आकर कहा कि 'चिंता मत करो बेटा, सब बहुत जल्द ठीक हो जायेगा और फिर तुम पहले की तरह खिलती हुई जाओगी और जीत कर आओगी फिर से मुझे तुम पर गर्व होगा। चलो, अब जल्दी से तुम एक काम करो कि पहले कि तरह तैयार होकर डांस करो और हम सभी परिवार वाले तुम्हारा डांस देखेंगे। ऐसा सुनते ही ज्ञानवती के होठों पर हंसी फूट पडी और ज्ञानवती के पापा ने उसको गले लगा लिया।

नगीना यादव

बालिका शिक्षा

देसूला गांव में माही, काजू, रिया तीन सहेलियां रहती थीं। काजू और रिया दोनों बहनें थी। तीनों एक ही मोहल्ले में रहती थी। माही के पिताजी व्यापारी थे जिनका नाम मोहन था। काजू और रिया के पिताजी मजदूर थे जिनका नाम शामू था।

काजू और रिया के पिताजी मजदूरी पर जाते और उससे जो पैसे मिलते थे उससे वह घर का खर्चा चलाते और रिया, काजू की पढ़ाई में लगा देते थे। सब कुछ अच्छे से चल रहा था। एक दिन अचानक गांव में कोरोना नामक एक संक्रमण आया। जिसकी चपेट में पूरा देश ही नही बल्कि पूरा विश्व आ चुका था। देश के हालात को देखते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सम्पूर्ण लॉकडाउन लगाने का आदेश दे दिया। जिसका पालन पूरे देश ने किया।

जैसा कि लॉकडाउन लग चुका था- काजू और रिया के पिताजी मजदूर थे जिस कारण वह मजदूरी पर नहीं जा पा रहे थे। घर की स्थिति खराब होने लगी पर सरकार ने भामाशाह योजना से लॉकडाउन में गरीबों की मदद की।

कुछ महिनों बाद लॉकडाउन खुलने की खबर सुनकर काजू और रिया को वापस स्कूल जाने की खुषी होने लगी। रिया और काजू का आगे पढ़ने का बहुत मन था पर घर की स्थति ठीक नहीं थी कि उन्हें आगे तक पढाई करवाई जा सके। तब रिया और काजू के पिताजी ने निर्णय लिया कि अब दोनों बच्चों का विवाह कर देना चाहिए। इस विचार से रिया और काजू की माताजी भी सहमत थी। इस बात को सुन कर रिया और काजू चिन्ता में पड़ गई। उन्हें तो अभी आगे की पढ़ाई करनी है। तब वह अपनी दोस्त माही के घर जाती हैं और उससे मदद मांगती हैं थी वह उनके माता-पिता को समझाएं।

तब माही अपने पिताजी मोहन को ले कर काजू और रिया के घर जाती है। माही के पिताजी काजू, रिया के पिताजी शामू को समझाते हैं पर वह अपनी आर्थिक स्थिति के बारे में बताते हैं और उनकी बात नही मानते हैं। तब माही और मोहन निराश होकर घर वापस लौट जाते हैं।

माही एक एमिड नाम की संस्था से जुड़ी हुई थी। माही के मन विचार आता है कि वो अपने संस्था के टीचर से मदद मांगेगी और वो जरूर उसकी बात सुनेंगे और रिया काजू की मदद करेंगे।

तब सीमा दीदी और अनूप सर काजू, रिया के घर आते हैं और उनके पिताजी और माताजी की स्थिति के बारे में सुनते हैं। तब अनूप सर ने कहा कि वो उन दोनों की स्कूल फीस भरेंगे और उन्होंने स्कॉलरशिप के बारे में भी बताया। उन्होंने बाल विवाह से होने वाले नुकसान के बारे में भी बताया।

इसी बात पर रिया बोली कि मैं बच्चों को ट्यूशन पढ़ाऊंगी, अपनी और काजू की पढ़ाई का खर्चा खुद निकालूंगी। तब उनके पिताजी समझ जाते हैं और उन्हें पढ़ाने का फैसला करते हैं। इस बात को सुन कर सब खुश हो जाते हैं।

काजू रिया, माही, सीमा दीदी और अनूप सर को धन्यवाद बोलतीं हैं।

एमिड संस्था ने रिया को गांव में ट्यूशन की नौकरी दे दी। वह खुद पढ़ती और बच्चों को भी पढ़ाती है। अब माही काजू और रिया तीनों खुशी-खुशी एक साथ स्कूल जातीं हैं।

“बेटी भार नहीं आभार है , बेटी का अधिकार है”

मनप्रीत कौर

शिक्षा का महत्व

रामपुर गांव में सुनील और सन्दीप नाम के दो दोस्त रहते थे। वो दोनों साथ ही स्कूल में पढ़ते थे। सुनील का पढ़ाई में बहुत मन था और सन्दीप का पढ़ाई में बिल्कुल मन नहीं लगता था। सन्दीप ने 12वीं कक्षा पढ़कर स्कूल छोड़ दी। सुनील ने पढ़ाई जारी रखी। सुनील बी.ए., एम.ए. पूरी करके अपने गांव लौट रहा था।

रास्ते में उसे अपना दोस्त सन्दीप मिला। सन्दीप ने सुनील से पूछा- भाई, अभी आप क्या कर रहे हो। सुनील ने कहा- भाई, मैं तो एम.ए., बी.ए. पूरी करके घर आ रहा हूं। सन्दीप ने कहा- सुनील, एम.ए., बी.ए. करके तू क्या करेगा, मजदूरी तो करनी पड़ेगी, क्या कर लेगा पढ़ लिख कर। सुनील चुप रहा और बोला- भाई सन्दीप, आप क्या कर रहे हो ? सन्दीप बोला- मैं मजदूरी कर रहा हूं। दिन के 600-800 रुपये मिल जाते हैं और अपना घर आराम से चला लेता हूं। मुझे कुछ भी करने की जरूरत नहीं मैं तो मजे में रहता हूं।

ये कह कर दोनां अपने अपने घर को चल दिए। सुनील ने गांव आकर अपनी आई.ए.एस. की तैयारी की। सुनील का सपना पूरा हुआ और वह आई.ए.एस. (प्राशसनिक अधिकारी) बन गया।

एक दिन सुनील गांव के लोगों के पास खड़ा था और गांव में हुए खेती के नुकसान और गांव के विकास के लिए बातें कर रहा था। तब सन्दीप ने देखा, सुनील आई.ए.एस. बन चुका है और वह लोगों की मदद कर रहा है। सन्दीप ने सुनील से माफी मांगी और बोला- भाई, मुझे माफ कीजिए मैंने आपको कितना बुरा भला बोला। अगर उस दिन मैं भी 12वीं पढ़कर स्कूल नहीं छोड़ता तो आज आपकी तरह सफल बन गया होता।

शिक्षा :- जिन्दगी में सफल होने का एक तरीका- निरंतर शिक्षा ग्रहण करते रहना है।

पठान खां

लगन

दो मित्र विकास और सकल एक ही गांव खेमपुर में रहते थे। सकल की आयु बारह वर्ष थी। उसकी मां शीला घर का कामकाज देखती थी। उसके पिता बूरा चौधरी खेत में काम करते थे। सकल घर के कामकाज में अपनी मां की मदद करता था। वह अपने छोटे भाई जीतू और बहन सीतू की भी देखभाल करता था। उसके चाचा श्याम ने मेट्रिक की परीक्षा पास की थी, लेकिन वह घर में बेकार बैठा था क्योंकि उसे कोई नौकरी नहीं मिली। बूरा और शीला चाहते थे कि उनका बेटा सकल पढ़े लिखे। वे उस पर गांव के स्कूल में नाम लिखाने के लिए जोर देते थे जिसमें उसने शीघ्र प्रवेश पा लिया। उसने पढ़ना शुरू किया और उच्चतर माध्यमिक की परीक्षा पास कर ली।

उसके पिता ने उसे अपनी पढ़ाई जारी करने के लिए राजी कर लिया। उन्होंने सकल के लिए कम्प्यूटर के व्यावसायिक कोर्स में अध्ययन के लिए कर्ज लिया। सकल प्रतिभाशाली था और आरंभ से ही पढ़ाई में उसकी रूचि थी।

उसने बड़ी लगन और उत्साह से अपना कोर्स पूरा किया। कुछ समय के पश्चात् उसे एक प्राइवेट फर्म में नौकरी मिल गई। उसने एक नए प्रकार के सॉफ्टवेयर को डिजाइन भी किया। इस सॉफ्टवेयर से फर्म को अपनी बिक्री बढ़ाने में सहायता मिली। उसके बॉस ने उसकी सेवाओं से प्रसन्न होकर उसे पदोन्नति दे दी।

प्रकाश मेघवाल

गुरू शिक्षा

बाहर बारिश हो रही थी और अन्दर कक्षा चल रही थी।

तभी टीचर ने बच्चों से पूछा - अगर तुम सभी को 100 रूपया दिया जाए तो तुम सब क्या क्या खरीदोगे ?

किसी ने कहा- मैं वीडियो गेम खरीदूंगा.

किसी ने कहा- मैं क्रिकेट का बेट खरीदूंगा.

किसी ने कहा- मैं अपने लिए प्यारी सी गुड़िया खरीदूंगी.

तो किसी ने कहा- मैं बहुत सी चॉकलेट्स खरीदूंगी.

एक बच्चा कुछ सोचने में डूबा हुआ था... टीचर ने उससे पूछा तुम क्या सोच रहे हो ? तुम क्या खरीदोगे ?

बच्चा बोला- टीचर जी मेरी माँ को थोड़ा कम दिखाई देता है तो मैं अपनी माँ के लिए एक चश्मा खरीदूंगा.

टीचर ने पूछा- तुम्हारी माँ के लिए चश्मा तो तुम्हारे पापा भी खरीद सकते हैं. तुम्हें अपने लिए कुछ नहीं खरीदना ?

बच्चे ने जो जवाब दिया उससे टीचर का भी गला भर आया.

बच्चे ने कहा- मेरे पापा अब इस दुनिया में नहीं हैं.

मेरी माँ लोगां के कपड़े सिलकर मुझे पढ़ाती है, और कम दिखाई देने की वजह से वो ठीक से कपड़े नहीं सिल पाती है। इसीलिए मैं मेरी माँ को चश्मा देना चाहता हूं।

ताकि वो कपड़े सिले और मैं अच्छे से पढ़ सकूँ, और माँ को सारे सुख दे सकूँ।

टीचर- बेटा तेरी सोच ही तेरी कमाई है। ये 100 रूपये मेरे वादे के अनुसार और, ये 100 रूपये उधार दे रहा हूं। जब कभी कमाओ तो लौटा देना और मेरी इच्छा है कि तुम इतने बड़े आदमी बनो कि तुम्हारे सर पे हाथ फेरते वक्त मैं धन्य हो जाऊं.

20 वर्ष बाद .....

बाहर बारिश हो रही है और अन्दर कक्षा चल रही है.

अचानक स्कूल के आगे जिला कलेक्टर की बत्ती वाली गाड़ी आकर रूकती है, स्कूल स्टाफ चौकन्ना हो जाता है.

स्कूल में सन्नाटा छा जाता है।

जिला कलेक्टर एक वृद्ध टीचर के पैरों में गिर जाते हैं और कहते हैं सर मैं उधार के 100 रूपये लौटाने आया हूं।

वृद्ध टीचर झुके हुए नौजवान कलेक्टर को उठाकर भुजाओं में भर लेता है और रो पड़ता है।

चन्द्रेश जांगिड़

शिक्षा की लगन

सीमा एक ऐसे गांव में रहती है जहां गांव में लड़कियों को पढ़ने की इजाजत नहीं है। सीमा रात और दिन अपनी मां को बोलती है कि मां हमारे गांव में सभी लड़के पढ़ने के लिए स्कूल जाते हैं किंतु लड़कियों को क्यों नहीं भेजते इसलिए वह घर में ही पढ़ाई करती है। स्कूल की किताबें और पड़ने की इच्छा को लेकर वह एक पेड़ के नीचे बैठ जाती है।

उसकी मां उसकी पड़ने की लगन को देखकर सीमा के पापा को कहती है कि क्यों ना हम अपनी बच्ची को स्कूल भेजें ताकि वह पढ़ लिखकर कुछ बन सके। इस कोरोना काल में हमारे पास कुछ नहीं था हम पढ़े-लिखे नहीं थे अगर हम पढ़े-लिखे होते हमारे पास भी नौकरी होती हमें किसी के सामने हाथ फैलाने की जरूरत नहीं होती इसलिए हमें अपनी बेटी को बढ़ाना चाहिए ताकि वह पढ़ लिख कर नौकरी करे और हमारा नाम रोशन करे आगे बढ़े। इसके बाद सीमा के पापा को एहसास होता है कि उसे अपनी बेटी को पढ़ाना चाहिए।

इसलिए वह अपनी बेटी को स्कूल भेजने के लिए तैयार हो जाते हैं। सीमा ये सुनते ही खुशी से झूम उठती है और सुबह होने का बेसब्री से इंतज़ार करती है। वह पूरी रात जाग कर अपना बैग जमाने, किताबों को रखने लग जाती है खुद ही जल्दी जल्दी स्कूल जाने के लिए तैयार हो जाती है और अपनी मॉ से दो चोटी बनवाकर अपने घर से खुशी खुशी निकल जाती है।

इस तस्वीर में सीमा स्कूल जा रही है और बहुत खुश दिखाई दे रही है।

ललिता

गुरू

कभी डांट से कभी प्यार से, निरक्षर से साक्षर हमें बनाते।

कभी सख्त तो कभी नरम बन, जीवन जीना हमें सिखाते।

चाहे मार्ग हो कितना भी दुर्गम, सिखाते कला बनाने की उसे सुगम।

दूर कर हमारी अनेक कमियां, ला देते हैं हमारे अन्दर अनेक खूबियां।

कभी माता पिता बन संस्कार सिखाते, तो कभी मित्र बन हौंसला बढ़ाते।

कामयाबी के सफर में कभी हमारे लिए कड़ी धूप बन जाते हैं,

क्योंकि वह जानते हैं कि मिल जाती है छांव तो कदम रूक जाते हैं।

इस तरह लक्ष्य के शि खर तक हमें पहुंचाते,

वह हमारे प्रेरणादायक गुरू कहलाते हैं।

मिल जाता है अगर उनका आशीर्वाद,

होता है वह जीवन का सबसे बड़ा प्रसाद।

मेरे गुरू ही है मेरा गुरूर, करूं मैं उनका नाम रोशन दूर दूर।

करते जो सदा गुरू का सादर वंदन, मिलता है उन्हें ज्ञान का अमूल्य चंदन।

होता है उनका सभी जगह अभिनन्दन, अतुल्य है गुरू और शिष्य का बधंन।

गौरी सोनी

Lockdown taught Neeta doodle dance and Sketching

Friendship is also about sharing joys and hobbies. There were two best friends, Neeta and Sunita. Both were alike yet different. Both shared almost everything, studies, worries and passions. But Sunita was good at a dance while Neeta was reluctant to learn. It is often said that gloomy times brings families together. But lockdown during the pandemic has also proved that it brings friends closer and passions too.

As soon as the lockdown was announced in March 2020, both Neeta, Sunita and their classmates became upset after their teacher informed them about the closing down of their school. Initially, Rajasthan had announced the lockdown for two weeks. So children were hoping to return to school soon. But soon after the national lockdown was announced their hopes were shattered. Now they would have to wait longer to unite with their friends.

After spending few days in the lockdown Neeta started getting bored. She started missing Sunita and her other classmates. Staying at home was a new normal but she was unable to adjust. Suddenly she remembered wise words said by her English teacher, a day before the lockdown kicked off. The teacher had told the students to learn new art forms, skills, language, etc while being at home in the pandemic. She suddenly thought of learning Doodle dance from Sunita and Painting from another friend Rachna. She called them and took advice from them. And from the very next day, she started watching starting dedicating a few hours to these two new acquired hobbies. In a month she not only learnt two new skills but found ways of utilizing time more creatively.

Now Neeta makes her own videos of doodle dance and paintings which she regularly uploads on her youtube channel. Neeta is thankful to her friends, teacher family and also the lockdown for bestowing her with two skills.

तनुष्का बैरवा

समझदारी

एक होनहार और मेधावी, 13 साल की लड़की मेघा जो रोज स्कूल जाती थी। वह 7वीं कक्षा में पढ़ती थी। उसकी मां घर के काम करती थी और उसके पिता एक छोटी सी परचून की दुकान चलाते थे।

उसके पिताजी बहुत मेहनती थे। वह अपनी छोटी-सी दुकान को भी बहुत अच्छे से चलाते थे और उस कमाई से अपनी बेटी को पढ़ाते और अपना घर खर्च चलाते थे। मेघा के माता-पिता खेतीबाड़ी भी करते थे। अचानक से देश में एक खतरनाक बीमारी का आवागमन हुआ। सभी लोग कहने लगे ये कोई खांसी, बुखार जैसी बीमारी नहीं है लेकिन यह बीमारी खांसी-बुखार से ही होती है जिसे भी यह बीमारी हो उसकी जान नहीं बचती है। उस बीमारी का नाम कोविड-19 यानि कोरोना वायरस है। ये किसी चीन नामक देश से आई है। इस बीमारी का कोई इलाज नहीं है। धीरे-धीरे यह बीमारी बढ़ने लगी और इसका कोई ईलाज भी नहीं था। सरकार ने भी इस महामारी से परेशान होकर धीरे-धीरे दुकाने बंद करवाना शुरू कर दिया।

यह सुन कर डर के मारे मेघा के पापा ने भी दुकान बंद कर दी और धीरे-धीरे उनके पास पैसे खत्म होते जा रहे थे और उनकी जो भी जितनी भी बचत थी वह भी धीरे-धीरे कम होने लगी। उसके ऊपर से मेघा के स्कूल की फीस जमा कराने की तिथि नजदीक आने लगी।

उसके पिताजी ने जैसे-तैसे कुछ सामान उधार रखकर अपनी बेटी की स्कूल फीस जमा करा दी। देश में पूरी तरह से लॉकडाउन लग गया, बाहर निकलना बंद हो गया। मेघा घर में रहते रहते परेशान हो गई थी।

साथ में खेलने के लिए दोस्त भी नहीं थे। दूसरों को देखते-देखते वह भी धीरे-धीरे अपने पापा का फोन चलाने लगी और उसमें नये-नये खेल-खेलती थी।

धीरे-धीरे उसे इन मोबाइल में खेले गये खेलों की आदत लग गई। उसके स्कूल वालों ने ऑनलाइन पढ़ाई शुरू कर दी और उसने भी ऑनलाइन पढ़ना शुरू कर दिया लेकिन उसका मन ऑनलाइन खेल में ही लगा रहता था।

वह अपनी ऑनलाइन पढ़ाई को चालू करके एकतरफ ऑनलाइन खेल खेलती थी। इससे उसकी पढ़ाई का बहुत नुकसान हो गया था।

धीरे-धीरे कोरोना वायरस कम होने लगा और स्कूल, दुकाने सब खुलने लगे। मेघा का मन स्कूल से ज्यादा फोन में लगा रहता था लेकिन वह फिर भी सबको दिखाने के लिए स्कूल जाती थी और उसके अध्यापक उससे कुछ पूछते तो वह उसका गलत जवाब देती थी। ऐसा बहुत दिनों तक चला लेकिन फिर उसका फोन चलाना धीरे-धीरे कम हो गया और उसे समझ आ गया कि फोन से ज्यादा स्कूल जरूरी है और खेल से ज्यादा पढ़ाई जरूरी है।

हिमांशी शर्मा

स्कूल बिना जीवन कैसा

स्कूल एक मन्दिर है जो हमें शिक्षा रूपी प्रसाद देता है। स्कूल में एक बात मुझे बहुत अच्छी लगती है कि वहां भेदभाव नहीं किया जाता। सभी बच्चों को एक समान ज्ञान प्रदान किया जाता। नई-नई बातें सिखाई जाती है और बहुत सी नई-नई जानकारियां मिलती है। अगर हम स्कूल नही जायेंगे, तो हमें ये कभी भी प्राप्त नहीं होंगी। मैं अपने शिक्षकों से हर रोज प्रेरित होती हूं।

लॉकडाउन लगने से पहले मैं रोजाना अपनी दोस्तों के साथ स्कूल जाया करती थी, मेरे स्कूल में नए-नए कार्यक्रम होते थे। 15 अगस्त और 26 जनवरी को गांव के सारे लोग स्कूल में कार्यक्रम को देखने आते थे जिससे हमारा बहुत उत्साह बढ़ता था। स्कूल में कई प्रकार की जयंतियां भी मनाई जाती थी।

जब स्कूल में लंच होता तब हम सभी दोस्त साथ में पानी पूरी खाने जाते थे। उस समय बहुत ही मजा आता था। बहुत याद आती है अपने सारे दोस्तों की, स्कूल से घर लौट कर आते समय कभी झगड़ा होता था तो कभी मस्ती होती थी। कभी धूप तो कभी छांव, कभी बारिश का मौसम! बस हर दिन हरे भरे खेतों से, शिव जी के मंदिर में दर्शन कर घर आ जाते थे।

जब मुझे कुछ समझ में नहीं आता था तो मैं दोस्तों से पूछ लेती थी। मुझे नहीं पता कि मैं एक बेहतरीन दोस्त हूं या नहीं लेकिन जिनके साथ मेरी दोस्ती है वह बहुत ही बेहतरीन और होनहार लड़कियां हैं। दोस्तों का मार्गदर्शन होना भी बहुत जरूरी होता है। उनसे परिश्रम की सीख और ऐसी जानकारियां मिलती हैं जो हमारे जीवन के लिए बहुत ही जरूरी है।

जब से कोरोना वायरस ने पूरी दुनिया पर हमला कर रखा है। लोगों में डर बैठ गया है। जिसके कारण कई लाखों लोगों ने अपनों को खोया है।

मंदिर, मस्जिद, गिरजाघर के दरवाजों पर ताला लग गया था किन्तु देश में शराब खुलेआम बिक रही थी। शिक्षकों ने शिक्षा को ऑनलाइन की सहायता से बच्चों तक पहुचाया उन्हें कई परेशानियों का सामना करना पडा, फिर भी हमें शिक्षित बनाये रखने के लिए हमारे शिक्षकों ने कोई कमी नही की।

स्कूल और शिक्षा के बिना हमारा जीवन सफल नहीं हो सकता है।

सरोज गुर्जर

उड़ान पर पाबंदी

मीना को खेलना, पढ़ना और घूमना अच्छा लगता था, लेकिन उसे घर में यह सब करने की मनाही थी। मीना के माता-पिता उसे घर से बाहर नहीं जाने देते थे क्योंकि उनका मानना था कि लड़कियां घर पर ही रहना चाहिए और घर का सारा काम करना चाहिए। मीना बहुत दुखी रहती थी और विद्यालय जाती अपनी सहेलियों को देखा करती। मीना का जीवन घर की चार दीवारी में बन्द हो कर रह गया था। उसे इस बात का बुरा लगता था कि वो उन सभी की तरह खेल, पढ़ नहीं सकती।

वो अपनी खिड़की से रोजाना बाहर देखती और मन ही मन में कहती, काश! मैं भी बाहर जा पाती...।

कई गाँवों में आज भी लड़कियों को घर पर ही रहकर घर का काम करने के लिए बाध्य किया जाता है। जिससे लड़कियां जीवन की कई सारी संभावनाओं से वंचित रह जाती हैं।

मीना खिड़की के बाहर की दुनिया देखना चाहती है और कुछ इस तरह से ये तस्वीर इस कहानी को दर्शा रही है।

रेनुका भाटी

चार दीवारी से झांकता बचपन

कोरोनाकाल में घरों में कैद हो चुके बच्चे अपने घर की खिड़की से झांकते हुए सवाल कर रहे हैं कि ये समय कब खत्म होगा? कब हम इस चारदीवारी से बाहर निकलेंगे। कब हम अपने दोस्तों से मिलेंगे? कब हम बाहर की ताजा हवा का आनंद लेंगे? कब हमें इस कैद से मुक्ति मिलेगी? क्या हम पहले की तरह जीवन जी पायेंगे? क्या हम पहले की तरह सभी व्यक्तियों से घुलमिल पायेंगे?

इनकी आंखों में मुझे एक उम्मीद की झलक भी दिख रही है जो यह बयां कर रही है कि इस कोरोनाकाल की वजह से हम सब ने अपना बहुत कीमती समय खो दिया। लेकिन अब सब कुछ ठीक होने वाला है। हम फिर से अपने परिवार-दोस्तों व रिश्तेदारों से मिल सकेंगे।

ज्योति पिंगोलिया

गुरू की महिमा

गुरू के चरणों की धूल,
चंदन बने या गुलाल,
जिसने भी अपने मस्तक पर लगाई,
किस्मत चमकी बार-बार, बार-बार ।।
जिसके पास हो धर्म,
वो कभी उदास नहीं होता,
और जिसके सिर पर हो,
गुरूदेव का हाथ वो कभी अनाथ नहीं होता।।
गुरू से बढ़कर, कुछ अनमोल नहीं
हर वस्तु का मोल है। पर गुरू का कोई मोल नहीं।।
गम देने वाले तो, हर पल हैं यहां
खुशी देने वालों में, गुरू आपको ही देखा।।
कैसे गुणमान करूं आपका शब्दों की औकात नहीं
सागर को गागर में भरना, मेरे बस की बात नहीं।।
ओ गुरूदेव आप जो मिले, मुझको सहारा मिल गया
अटकी हुई कश्ती को, किनारा मिल गया।।
किसी गिरे को उठाओगे, तो गुरू आपको गिरने नहीं देंगे
रोते को हंसाओगे तो गुरू आपको रोने नहीं देंगे।।

पठान

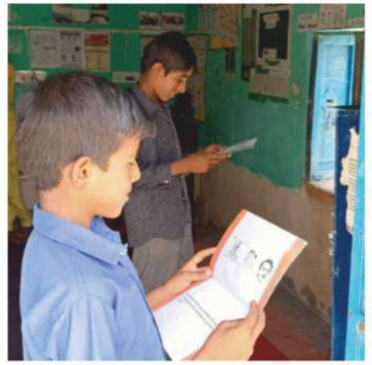

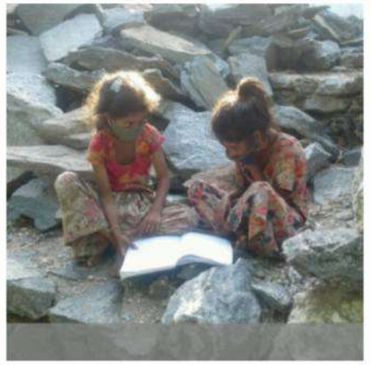

मेरी रचना
कितनी सुंदर

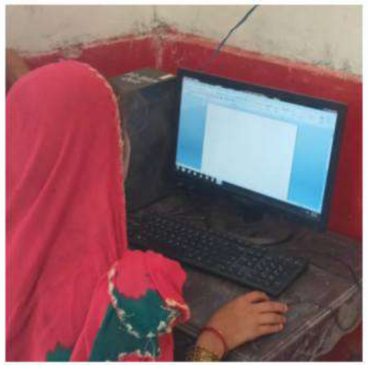

हमारे
त्यौहार

मेरी रचना
कितनी सुंदर

साबुन से हाथ धोना है।
दूर भगाना है।।

मेरी रचना
कितनी सुंदर

मेरी रचना
कितनी सुंदर

मानव/जीवन

मुझे भी कुछ कर दिखाना है

मैं हूँ एक नन्हीं-सी परी, परियों के देश में हूँ पली-बड़ी

क्यूं रौंध दिया है जीवन मेरा, फूल समझ कर,

नहीं घबराना है, मुझे भी कुछ करके दिखाना है।

क्यूँ बन्द किया है, मुझे इन दीवारों में,

मुझे भी आगे बढ़कर दिखाना है, देश को लड़कियों के प्रति जगाना है,

मुझे भी कुछ करके दिखाना है।

कल तक थी मैं एक नन्हीं-सी कली, आज मुझे सबको समझाना है

ना समझो बेटियों को कमजोर, यह पाठ सबको पढ़ाना है

मुझे भी कुछ करके दिखाना है।

मुझे भी शिक्षा का अधिकार है, यूं ना छीनों मुझसे ये अधिकार

दोस्तों को बराबर का दर्जा दिलाना है, सब तक यह बात पहुंचानी है

मुझे भी कुछ करके दिखाना है।

टीना वर्मा

वो एक लड़की हर घर में होती है

ज़हन से उसके ये ख्याल नहीं जाता,

क्यों उसे इस दुनिया में पिता का कर्ज बताया जाता।

किसी अजनबी को अपनाने से वो ख़ौफ़ज़दा हो जाती,
वो चीखती और, गिड़गिड़ाती।

फिर कभी न हारने वाली लड़की, पिता की इज़्ज़त की सौगन्ध पर घुटने टेक जाती।

एक वही चीज़ है हर लड़की, जो हर हालातों से अक्सर समझौता कर जाती।

दरीचों के साये से जो राहें आज़ादी की ताकती है।

वो एक लड़की हर घर में होती है,

वो सोचती है खुद में, मुझे अकेला देख जो हाथ उनके बेशर्मी से मेरी ओर बढ़ते हैं।

फिर वही लोग चुप करा के हया की चादर में, मुझे घूंघट करने को क्यों कहते हैं?

क्यों सड़कों पर अजनबी चेहरा मुझे घूरता चला जाता है,

उसके तसव्वुर में बारम-बार, ये खलिश रह जाती है।

“वो सोचती है खुद में, हद में, क्यों उसे हर मर्द से खौफ कराया जाता है?

और अगर इस ख्याल से इनकार करे तो, निर्भया को याद दिलाया जाता है।

वो एक लड़की हर घर में होती है।

मेहर बानो

दुनिया हॅसती है

दुनिया कहती है कि दर्द नही है सीने में,
दर्द के पर्दा लगा रखा है क्योंकि मज़ा आ रहा जीने में।
पीछे से लोग क्या कहेंगें मुझे इसका डर नही,
आगे लोगों की बोलने की हिम्मत नही।
यही सच है कि ये देखकर दुनिया हॅसती है।।
कितनी ही बाधाएं चाहे क्यूं ना आ जाये,
अपना लक्ष्य हम पाकर दिखाएंगे।
यही सच है की देखकर दुनिया हॅसती है।।
अपना लक्ष्य हम पाकर दिखाएंगे।
यही सच है की देखकर दुनिया हॅसती है।।

डिंपल छीपा

पिता

पिता एक उम्मीद हैं, एक आस हैं
परिवार की हिम्मत और विश्वास हैं।
बाहर से सख्त अंदर से नर्म है,
उसके दिल में दफन कई मर्म हैं।
परिवार संघर्ष की आंधियों में हौंसलों की दीवार है,
परेशानियों से लड़ने को दोधारी तलवार हैं।
बचपन में खुश करने वाला खिलौना है,
नींद लगे तो गोद पर सुलाने वाला बिछौना है।
पिता जिम्मेदारियों से लदी गाड़ी का सारथी हैं,
सबको बराबर का हक दिलाता यही एक महारथी हैं।
सपनों को पूरा करने में लगने वाली जान हैं,
इसी से तो माँ और बच्चों की पहचान हैं।
पिता ज़मीर हैं पिता जागीर हैं,
जिसके पास ये हैं वह अमीर हैं।

देवांशु जांगिड़

दादी की कहानी

चेल्सी अपनी दादी के साथ रहती थी। दादी के सिवा उसका इस दुनिया में कोई भी नहीं था। उसके माता-पिता उसे बहुत ही छोटी उम्र में छोडकर भगवान के घर चले गये थे। इसलिए दादी ही उसके लिये सब कुछ थी और वह उनसे बहुत प्यार करती थी। वह दादी के साथ ही सोती और उन्हीं के साथ ही वह खाना खाती थी।

एक दिन चेल्सी अपनी गुडियों के साथ खेल रही थी। तभी अचानक से उसे कहा जाता है कि अब वह 15 दिन तक अपनी दादी से नहीं मिल सकती।

चेल्सी पूछती है क्यों? क्या हुआ मेरी दादी को?

तो उसे पता चलता है कि उसकी दादी को कोरोना वायरस हो गया है। यह बात सुनते ही चेल्सी बहुत उदास हो जाती है और सोचने लगती है अब कौन मुझे सोने से पहले कहानियां सुनायेगा, मैं किसके साथ घूमने जाऊँगी, कौन मेरी सुंदर सी चोटियां बनायेगा, अब मैं किसके साथ मस्ती करूंगी और किसका चश्मा तोडूंगी, किसके साथ में लड़ाई करूंगी और जब आइसक्रीम वाला आयेगा तो मैं किसके पीछे गोल-गोल घूमकर कहूंगी- दादी ओ मेरी दादी! वो देखों आइसक्रीम वाला आ रहा है। प्लीज दादी मुझे भी आइसक्रीम दिलाओ ना दादी। फिर कौन मुझे कहेगा- मुन्नी तुम आइसक्रीम नहीं खा सकती बेटी अभी कोरोना चल रहा है,

तुम्हारी तबियत खराब हो जायेगी। ऐसी ही कुछ खट्टी मीठी यादें सोचते-सोचते वह रोने लग जाती है और उसे बहुत ही डर लगने लगता है।

वह जिस गुडिया से खेल रही थी उसे लेकर वह घर के एक कोने में जाकर बैठ जाती है और गुडिया से बाते करने लगती है।

वह कहती है तुम्हें पता है इस दुनिया में मेरा तुम्हारे और दादी के अलावा कोई नहीं है।

तुम तो मेरे साथ हो पर मेरी दादी मां नहीं क्योंकि उन्हें कोरोना हो गया है। मुझे कहा गया है कि मैं उनसे नहीं मिल सकती। मुझे बहुत ही अकेलापन महसूस हो रहा है। मेरी दादी मां स्वस्थ तो हो ही जायेगी ना गुडिया, यह सोचते हुए चेल्सी सो जाती है।

कुछ देर बाद वह उठती है तो उसे सुनाई देता है कि उसके दरवाजे पर कोई घंटी बजा रहा है। वह दरवाजा खोलती है और देखती है कि उससे मिलने उनके पास ही में रहने वाली एक आंटी आई है। वह उन आंटी को अंदर बुलाती है। वह आंटी सबसे पहले तो चेल्सी को एक जगह बिठाकर खाना खिलाती है। उसके बाद वे कहती है कि देखो बेटा चेल्सी तुम्हें घबराने की जरूरत नहीं है, तुम्हारी दादी जल्दी ही स्वस्थ हो जायेगी। तुम ईश्वर से उनके लिये प्रार्थना करो और अपना अच्छे से ख्याल रखो।

अगर तुम उदास रहोगी ना तो तुम्हारी दादी भी उदास रहेगी और तुम्हारी चिंता करेगी जिससे कि वे जल्दी स्वस्थ नहीं हो पायेगी और हम सब तुम्हारे साथ हैं। जब तक तुम्हारी दादी मां ठीक नहीं हो जाती है हम तुम्हारा ध्यान रखेंगे। आंटी की सहानुभूति भरी बातें सुनकर चेल्सी घबराना बंद कर देती है और प्रतिदिन ईश्वर से अपनी दादी के स्वस्थ होने की कामना करती है।

कुछ दिन बाद चेल्सी को खबर मिलती है कि उसकी दादी मां कोरोना को हरा कर फिर से स्वस्थ हो गई है।

यह बात सुनने के बाद चेल्सी बहुत ही खुश हो गई और फिर से अपनी दादी मां के पास चली गई और दादी से मस्ती करने लगी और खुद मीठी सी बातें करने लगी। चेल्सी ने उन्हें उन आंटी के बारे में भी बताया जिन्होंने उसकी मुश्किल समय में मदद करी थी।

दादी मां ने उन आंटी का बहुत-बहुत आभार व्यक्त किया और उनका शुक्रिया अदा किया।

सीखः- हम सभी को हमेशा मुश्किल घड़ी में एक दूसरे की सहायता करनी चाहिए।

टीना वर्मा

मेरे प्यारे पापा

प्यारे पापा सच्चे पापा, बच्चे के संग बच्चे पापा
करते हैं पूरी हर इच्छा, मेरे सबसे प्यारे पापा
पापा ने ही तो सिखलाया, हर मुश्किल में बन कर साया
जीवन जीना क्या होता है, जब दुनिया में कोई आया
जब पहला कदम भी नहीं आया, अंगुली को पकड कर सिखलाया
नन्हें प्यारे बच्चे के लिए, पापा ही सहारा बन जाते
जीवन के सुख-दुख को सहकर पापा की छाया में रहकर
बच्चे कब हो जाते हैं बड़े यह भेद नहीं कोई कह पाया
दिन रात जो पापा करते हैं बच्चों की खुशियां लिये
अपनी खुशियों के लिए अपनी खुशियों को हरते हैं पापा
मेरे प्यारे पापा

प्रियंका मीना

मेरा प्यारा घर

मेरा प्यारा घर,
जग से न्यारा मेरा घर।
जहां सुख मिलता सारा,
वह है प्यारा घर हमारा।
जब हम जाते घर से दूर,
घर जल्दी जाने को मजबूर।
घर में रौनक है छा जाती,
जब घर पर बुआ है आती।
नाना मौसी के साथ,
मौज करते दिन-रात।
भाई बहनों का प्यारा बंधन,
अपने घर को करता सुंदर।
आपस में टकरार भी,
घर है पहचान प्यार की।
त्योहार पर देखो मेरा घर,
लगता है परियों सा घर।
मां का प्यार, पिता का दुलार,
देता हमें जीने का आधार।
सारे जग से न्यारा घर,
मेरा प्यारा प्यारा घर।

मिताली राज सोनी

परिवार की जीत

एक शहर में एक संयुक्त परिवार रहता था और सभी के अंदर एक दूसरे के लिए प्रेम था। उस संयुक्त परिवार में एक दादू दयाल नाम का व्यक्ति एवं उसकी पत्नी लक्ष्मी और उसके तीन बेटे रहते थे। उनके बेटे बड़े हो गये और सभी की अच्छी नौकरी लग गयी।

जैसे-जैसे वक्त बीतता गया वे थोड़े और बड़े हुए और अब उनके माता-पिता को उनकी शादी की फिक्र होने लगी और फिर कुछ समय बाद में उनकी शादी भी हो गई और उनके भी बच्चे हो गये। पूरा परिवार खुश था लेकिन उनके बेटे देश-विदेश में नौकरी करते थे वे घर से दूर रहते इसलिए उनके माता-पिता थोड़े से अकेले दुखी रहते थे, लेकिन फिर अचानक पता चला कि पूरी दुनिया में एक महामारी आयी है और हो सकता है कि हमारे देश में लॉकडाउन लग जाये तब उनके माता-पिता ने उन सभी को घर बुलाया।

जैसे ही वे घर पहुंचे तो देखा कि माँ लाल ओढ़नी व लहंगा पहने चारपाई पर उनका इंतजार कर रही है और उनके पिता जी भी पहले की तरह अपने पोते-पोतियों के साथ खेलने के लिए खिलौने निकाल रहे थे। वे सभी बहुत खुश हो गये थे, लेकिन किसे पता कि उनकी मुस्कान जल्द ही एक कठोर संघर्ष में बदल जाएगी।

दादू दयाल की पत्नी लक्ष्मी का स्वास्थ्य अचानक खराब हो गया। सभी बहुत परेशान हो गये। कई हफ्तों तक पूरा परिवार लक्ष्मी की सेवा करता रहा। धीरे-धीरे लक्ष्मी की सेहत में सुधार दिखने लगा। सभी चीजें ठीक हो गयी और दादू दयाल का परिवार फिर से खुशहाल रहने लगा। दादू दयाल के परिवार ने मिलकर कोरोना महामारी से जीत हासिल की।

खुशबू यादव

शकरकंद और मेरे आंसू

सर्दी के दिन आएं और मेरे घर पर शकरकंद ना आए ऐसा कभी नही होता क्योंकि शकरकंद मुझे और मेरे पापा को बहुत पसन्द हैं। इसलिए जब भी पापा बाजार जाते तो बाजार से बढ़िया शकरकंद ढूंढ कर लाते। बाजार जाते हैं तो ज्यादा समय इनको खरीदने में लगा देते हैं। सुबह-सुबह जब मैं उठी तो मैंने देखा कि टोकरी में शकरकंद पड़े हैं क्योंकि रात को ही पापा लाये थे और तब मैं सोई थी। शकरकंद को घर आए हुए दो-तीन दिन हो गए लेकिन किसी ने इन्हें बनाकर खाने की नही सोची तभी मैंने सोचा कि आज मैं ही शकरकंद बनाकर खा लेती हूं। फिर मैं किचन में गई और कढ़ाई गैस पर रखी जैसे ही गैस चालू किया तो देखा कि सिलेंडर तो खाली था।

फिर मुझे एक सुझाव आया कि छत पर चूल्हा है क्यों न आज शकरकंद चूल्हे पर बनाए जाएं। सिलेंडर खाली हो गया था तो चूल्हे पर घर में से किसी ने चाय बनाई थी। चूल्हे में पहले से अंगारे थे इसलिए चूल्हा जलाने में मुझे ज्यादा दिक्कत नही हुई।

फिर मैंने शकरकंद को धोया, एक कढ़ाही में पानी डाल कर शकरकंद उसमें डाल दिए तब चूल्हा बराबर जल रहा था फिर मैं बालकनी में घूमने लगी।

तभी मेरी नजर पीयूष पर पड़ती है, पीयूष आठ साल का लड़का है। जो कि मेरे घर के सामने ही रहता है।

वो कुछ समय से गुजरात रह रहा था लेकिन कोरोना वायरस के कारण उसके पापा का काम नही रहा तो वो और उसका परिवार राजस्थान वापस आ गये। जब मैं छत पर थी तो वो भी छत पर ही खेल रहा था।

जब लॉकडाउन नही था तो पीयूष राजस्थान आता था और मेरे घर पर ही खेलता रहता था। लेकिन कोरोना वायरस के कारण पीयूष अब मेरे घर पर नही आ सकता था। जब मैं पीयूष से बातें कर रह थी तो इतनी देर में मैंने देखा कि चूल्हे पर आग तो बुझने को आई और चारों तरफ धुआं-धुआं हो गया उस कारण से मेरी आंखों में आंसू आ गए आंख मानों लाल रंग की हो गई।

एक तरफ तो आंसू आ रहे थे लेकिन मुझे तो शकरकंद खाने थे। फिर भी बंद आखों से मैंने शकरकंद बड़े चाव से खाये। यह सब देख मेरे परिवार वाले जोर जोर से हंसने लगे।

गायत्री खटीक

मेरी दुनियां

कभी जो गुस्से में आकर मुझे डांट देती,
जो रोने लगूं मैं मुझे वो चुप कराती।
जो मैं रूठ जाऊं मुझे वो मनाती,
मेरे कपड़े वो धोती मेरा खाना बनाती।
जो न खाऊं मैं मुझे अपने हाथों से खिलाती,
जो सोने चलूँ मैं मुझे वो लोरी सुनाती।
वो सबको रुलाती वो सबको हंसाती,
वो दुवाओं से सबकी बिगड़ी किस्मत बनाती।
और बदले में वो किसी से कभी कुछ न चाहती।
जब बुढ़ापे में उसके दिन ढ़लने लगते,
हम खुदगर्ज चेहरा अपना बदलने लगते,
एश-ओ-हसरत में अपनी उसको भूलने लगते।
दिल से उसके फिर भी सदा दुआएं निकलती है,
खुशनसीब हैं वो लोग जिनके पास माँ होती है।

पार्थ बैरवा

सेठ जी का कर्ज मां का फर्ज

एक पेड़ पर एक गिलहरी और उसके दो छोटे-छोटे बच्चे रहते थे। वे हमेशा अपनी मां के साथ रहते थे। बड़े बेटे का नाम लालू और छोटे बेटे का नाम कालू था। वे दोनों हमेशा अपने घर के आसपास ही खेलते थे। उसके घर के पास धीरे-धीरे बहुत प्रजाति की गिलहरीयों के परिवार आने लगे और अलग-अलग पेड़ पर अपना निवास स्थान बनाने लगे जिस वजह से खाने की कमी होने लगी।

समय बदलता गया और कालू, लालू बड़े हुए और उनकी मां बूढ़ी हो गई इसलिए वह खाने की तलाश में नहीं जा पाती थीं।

कालू व लालू दोनों भाई अपने गांव से दूर रोज अलग-अलग कस्बे में खाने की तलाश में जाते और अपनी बूढ़ी मां को दाना लाकर दे देते। एक दिन कालू व लालू को लगा कि हम रोज खाने की तलाश में जाते हैं और अपना सारा खाना रोज कैसे खत्म हो जाता है। लालू कहता हम तो खाना मां को देते हैं। मां इतना खाना कहां ले जाती है ? कालू व लालू दोनों पता लगाने के लिए माँ पर नज़र रखते हैं। कालू और लालू दोनों पेड़ के पीछे छुप जाते हैं और मां के घर से बाहर निकलने का इंतजार करते हैं दोनों भाई मां का पीछा करते हैं। गिलहरी एक सेठ के घर जाती है। हाथ में एक पोटली ले जाकर सेठजी को देती है और कहती है- जब मेरे बेटे छोटे थे तो आपने मुझे जो दाने दिए थे आज मैं वो सारे चुकाना चाहती हूं। यह सुनकर कालू व लालू को बहुत ही बुरा लगता है कि उन्होंने अपनी मां पर शक किया। कालू, लालू की आंखें भर आती हैं और दोनों ज्यादा मेहनत कर अपनी माँ को दाना लाकर देने की कोशिश में लग जाते हैं ताकि किसी दिन सेठजी का कर्ज पूरा हो और हम पूरे दाने ख़ुशी ख़ुशी खा पायें।

गायत्री खटीक

कोरोना और जीवनसाथी

एक गांव में पैंसठ साल का एक वृद्ध आदमी अनूपचर और उसकी पत्नी राजकुमारी एक साथ रहती थी। एक दिन उसकी पत्नी को अचानक चक्कर आ गया। उस वृद्ध आदमी ने उसके सिर पर हाथ लगाया तो पता चला कि उसे बहुत तेज बुखार है। अनूपचर ने उसके सिर पर गीली पट्टी लगायी। फिर भी उसे आराम नही मिला।

फिर कुछ देर बाद रामकुमारी की सांस बढ़ने लगी और वह जोर-जोर से खांसने लगी। अनूपचर रामकुमारी को अस्पताल ले गया और उसे गेट के बाहर पर रखे तख्ते पर लिटा दिया। फिर वह डॉक्टर के पास गया और बोला डॉक्टर साहब मेरी पत्नी को बुखार हो गया है, आप इसे बेड दे दीजिए। शुरुवात में डॉक्टर ने उसे बेड देने से मना कर दिया, लेकिन बाद में अनूपचर डॉक्टर को मनाकर ले आया।

डॉक्टर ने उसके लिए बेड की व्यवस्था की और बेड पर लिटा दिया। अचानक उसकी पत्नी ने आंखे बंद कर ली। डॉक्टर ने उसकी जाँच की लेकिन तब तक राजकुमारी की मृत्यु हो चुकी थी।

अनूपचर रोने लगा कोई भी उसे संभालने या उसकी पत्नी के शव को उठाने के लिए आगे नहीं आया। फिर वह अपनी पत्नी रामकुमारी को किसी तरह साईकिल पर बैठाकर श्मशान घाट की ओर चल पड़ा। अनूपचर की सांस बढ़ने लगी और वह साइकिल से नीचे गिर गया। वहां पास में ही खड़ी पुलिस उसके पास आयी और अनूपचर ने अपनी सारी बात पुलिस को बताई। पुलिस अनूपचर की मदद के लिए तैयार हो गई और उन्होंने अनूपचर की पत्नी का अंतिम संस्कार कराया। अनूपचर के उस कठिन समय में पुलिस ने उसका साथ दिया।

सीख - हमें किसी के दुख को नजरअन्दाज नही करना चाहिए।

मुस्कान शेख

मेरे अनुभव

कोरोनाकाल में लोगों को अनेक प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ा और कोरोना महामारी से सीखने को भी बहुत कुछ मिला है। इस महामारी से फायदे तो नहीं हुए हैं, लेकिन इसने लोगों को जीवन जीने के लिए अनेक प्रकार की सीख दी है। जीवन जीने के लिए ज्यादा पैसों की जरूरत नहीं है। जीवन जीने के लिए दो समय का भोजन ही पर्याप्त है।

कोरोना महामारी में अनेक प्रकार के फालतू खर्चों पर रोक लगी। जिससे लोगों को बचत का रास्ता मिला, जो आगे भविष्य में उनके काम आएगा। इस महामारी के कारण स्वयं को सुरक्षित रखने के भी उपाय मिले हैं जो स्वयं, परिवार व दूसरे परिजनों के जीवन के लिए लाभदायक हैं। इसके अलावा इस महामारी में लोगों को मदद या सेवा का मौका मिला। इसका निष्कर्ष यह है कि हमें अपने से आर्थिक कमजोर लोगों को निस्वार्थ भाव से मदद करनी चाहिए जिससे उन लोगों को इस परिस्थिति से लड़ने व बचने का सहारा मिले और उनके चेहरे पर खुशी आए तथा देशवासियों में प्रेम भाव बढ़े। कोरोना महामारी में लोगों को कई प्रकार के नुकसान भी हुए चाहे वे आर्थिक हों या मानसिक। कोरोना महामारी ने लोगों को अंदर कठोर बना दिया।

इसने लोगों को बेसहारा व बच्चों को अनाथ बना दिया, जिससे उनके जीवन व भविष्य पर बहुत गहरा संकट आ गया। इस संकट काल में कई लोगों ने सहायता करने के बजाय अनेक प्रकार की जरूरतमंद वस्तुओं जैसे दवाइयां, भोजन की कालाबाजारी का रास्ता अपनाया, जिससे लोगों व देश को बहुत ही नुकसान हुआ।

कोरोना महामारी में बच्चों के भविष्य के साथ भी बहुत ही बड़ा खिलवाड़ हुआ। विद्यार्थियों को बिना परीक्षा के पास करने से उनकी शिक्षा का स्तर बहुत खराब होगा जो उनके लिए आगे वाली कक्षा और जीवन में बहुत ही नुकसानदायक साबित होगा।

कोरोना महामारी में लोगों से उनके रोजगार भी छीन लिये। बेरोजगारी की वजह से कई लोगों को सुबह-शाम का भोजन भी नहीं मिल पाता। इस महामारी से बचने या इससे लड़ने के लिए हमें धैर्य रखना होगा तथा एक दूसरे की मदद करनी होगी। कोरोना महामारी से स्वयं बचे तथा दूसरों को भी बचाएं।

प्रभजय नागरवाल

मानवता का मूल्य

विलासपुर नाम के एक गांव में घनश्याम नाम का वृद्ध व्यक्ति रहता था। उसके परिवार में उसके सिवा और कोई नहीं था। उसकी पत्नी का कुछ महिनों पहले ही कोरोना महामारी के कारण देहांत हो चुका था। उसके बेटे भी बहुत सालों पहले ही उसे छोड़कर विदेश चले गये थे। उसके पास खुद का मकान भी नहीं था। वह गांव में एक घास-फूस से बनी टूटी सी झोंपडी में रहता था।

एक रात जब वह झोपड़ी में सो रहा था, जोरों से बारिश तो उसने देखा कि उसकी झोपडी में पानी ही पानी भर गया, झोपडी भी तेज बारिश के कारण झोपड़ी पूरी तरह बर्बाद हो गई थी। उसने यह गांव छोड़कर दूसरे गांव जाने का निश्चय किया, अगले दिन जैसे ही सुबह हुई वह दूसरे गांव की ओर चल पड़ा।

चलते-चलते बहुत धूप हो गई और सूरज उसके सिर पर आ गया था। उसका पूरा शरीर पसीने से लथपथ हो गया था। उसे बहुत तेज प्यास लग रही थी किन्तु न तो उसके पास पीने के लिए पानी था ना ही खाने के लिए भोजन।

उन्होंने कई घरों में मदद के लिये दरवाजे भी खटखटाये किंतु किसी ने भी उनकी मदद नहीं की। सभी से एक ही जवाब मिलता कि "अरे भाई तुम जानते नहीं हो क्या

अभी कोरोना महामारी का समय चल रहा है। पता नहीं कहां से आये हो तुम हमें कोरोना करोगे क्या?"

चलते-चलते वह वृद्ध व्यक्ति गॉव के सेठ धनीराम के घर के बाहर पहुचा - राम राम सेठजी। मैं दूसरे गांव से इस गांव आया हूं। मुझे बहुत प्यास लगी है क्या मुझे एक लोटा जल मिलेगा।

सेठजी ने कहा थोडी देर रूको मैं अभी हिसाब-किताब कर रहा हूं। वृद्ध को उनकी यह बात सुनकर थोड़ी संतुष्टि महसूस हुई कि आखिर किसी ने तो उन्हें मदद के लिए हां कही। कुछ देर बार वृद्ध व्यक्ति फिर से बोला :- सेठजी प्यास के मारे गला सूखा जा रहा है।

कृपया पानी पिला दीजिए ना। सेठजी फिर बोले - थोडी देर और रूक जाओ मेरा काम होने ही वाला है।

इसी प्रकार वृद्ध व्यक्ति बार बार कहता रहा और सेठजी ने भी वही जवाब दिया। आखिर में वृद्ध व्यक्ति ने कहा सेठजी ओ सेठजी कृपया अब तो जल पिला दीजिए ना। प्यास के मारे मेरे प्राण निकले जा रहे हैं।

सेठजी- अच्छा। रूको में किसी आदमी को बुलाता हूं।

वृद्ध ने सेठजी से कहा कुछ देर के लिए आप ही आदमी बन जाइये ना। सेठजी ने कहा अरे भाई! ये तुम क्या बोल रहे हो तुम्हें दिखता नहीं क्या? मैं तो पहले से ही आदमी हूं।

वृद्ध ने सेठजी से कहा आप केवल तन से ही आदमी हैं। अगर आप मन से भी आदमी होते तो आप इंसानियत के नाते काम छोड़कर मेरी ऐसी दशा देख पहले मुझे पानी पिलाते। सेठजी को वृद्ध की बातें सुनकर अपनी गलती का अत्यधिक पछतावा हुआ।

वृद्ध व्यक्ति ने सेठजी की आंखे खोल दी।

सेठजी ने वृद्ध व्यक्ति से माफी मांगी तथा उसे सबसे पहले पानी पिलाया।

सीख - परिस्थितियां चाहे कितनी ही विकट क्यों ना हो पर हमें इंसानियत कभी नहीं छोडनी चाहिए।

गौरी सोनी

सच की राह पर चलो साथियों

सच की राह पर चलो साथियों, कभी नहीं घबराना है,

सबके मन में सकारात्मकता को जगाना है।

सच्चाई की हमेशा जीत हुई, ये हमें कभी भी नहीं भुलाना है।

सच की राह पर चलो साथियों, कभी नहीं घबराना है।

झूठ का रास्ता जिसने भी अपनाया, कभी नहीं सुख से रह पाया है।

सच की राह पर चलो साथियों, कभी नहीं घबराना है।

सदाचार जिसने अपनाया, बुलंदियों को उसने पाया है।

सच की राह पर चलो साथियों, कभी नहीं घबराना है।

रोंदो ना जीवन अब अपना, कुछ आगे करके है दिखाना।

सच की राह पर चलो साथियों कभी नहीं घबराना है।

सद् गुण को जिसने अपनाया, वीरता को है उसने पाया।

सच की राह पर चलो साथियों, कभी नहीं घबराना है।

नकारात्मकता को दूर भगाना है, देश में सफलता का उजाला लाना है।

देश को सफल बनाना है, सबके मन में सकारात्मकता को जगाना है।

सच की राह पर चलो साथियों, कभी नहीं घबराना है।

टीना वर्मा

बेटियां

बेटियां माता-पिता का एक सपना होती है

बेटियां ही देश का आत्मसम्मान होती है।

बेटियां ही बेटों से बढ़कर होती है।

बेटियां ही मां का आंचल होती है।

बेटियां ही भाईयों की दुलारी होती है।

बेटियां ही घर की रौनक होती हैं

बेटियां ही समाज में एक संदेश होती है।

बेटियां ही सुख का सागर होती है।

बेटियां ही गंगा की तरह पवित्र होती है।

बेटियां ही है जो आखिर तक साथ निभाती है।

बेटियों को कभी भी कैद नहीं रखना चाहिए

क्योंकि बेटियों को भी आजादी का पूरा हक है।

शिवानी यादव

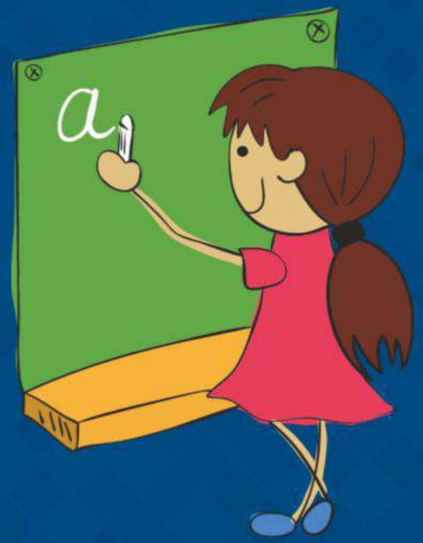

मैं सबसे छोटी होऊं

मैं सबसे छोटी होऊं तेरी गोद में, मैं सोऊँ,
तेरी साड़ी पकड़-पकड कर फिरूँ सदा मां! मैं तेरे साथ
कभी नहीं छोडूं तेरा हाथ।
पहले हमको बड़ा बनाकर तू पीछे चलती है मां
फिर सदा हाथ पकड़ हमारे साथ खड़ी रहती है मां।
दिन-रात अपने हाथ से खिला, धुला देती मुंह
धूल पोंछ, सजा शरीर को, थमा देती खिलौने,
और सुनाती हमें परिंदों की बात।
ऐसी बडी न होऊं मैं,
तेरा प्यार न खोऊं मैं तेरे आंचल की छाया में
छिपी रहूं बिना डर, इच्छा के।
बस इतना ही चाहूं मां मैं सबसे छोटी होउं
साथ सदा मैं तेरा पाउं।

मोहित बिजारणियां

कोविड-19 के कारण जल्दी विवाह

इस कहानी में एक लड़की है जो अपने सपने पूरे करने से पहले एक नये रिश्ते में बंध गई।

मेरा नाम बलविन्दर है मेरे गांव में मेरे ही पड़ोस में 17 साल की परमजीत रहती है। परमजीत के घर में उसकी मां और तीन छोटे भाई हैं। परम के पिता का कुछ सालों पहले स्वर्गवास हो गया था। परमजीत अपने सपने पूरा करना चाहती थी लेकिन उसके पापा की मृत्यु के बाद उसे मजदूरी करने जाना पड़ा। वह स्कूल भी जाती थी उसे पढ़ कर टीचर बनना था लेकिन कोरोना की वजह से उसकी पढ़ाई रूक गई और उसके लिए लड़का ढूंढने लगे और कुछ महीने बाद उसकी शादी हो गई परमजीत एक गरीब घर की लड़की थी और वो कुछ करना चाहती थी अचानक कोरोना का कहर बरसा कि उसके सब सपने गम में बदल गये।

परमजीत को पढ़ने में बहुत रुचि थी परमजीत कम उम्र की लड़की थी और कोरोना में ज्यादा खर्चा नहीं हो इसलिए उसका विवाह लॉकडाउन में ही हो गया लॉकडाउन के कारण उसकी शादी जल्दबाजी में कर दी।

परमजीत पढ़ाई भी करती और साथ-साथ मजदूरी पर भी जाती थी। परमजीत अपने पैरों पर खड़ा होना चाहती थी। अपने परिवार का नाम ऊंचा करना चाहती थी।

शादी के बाद वह जब मुझ से मिलने आई तो उसने मुझे पढ़ते देखा और कहने लगी अपनी पढ़ाई पूरी करना बीच में मेरी तरह पढ़ाई मत छोड़ना और बोली कि मेरे भी कुछ सपने थे जो इस कोविड-19 के कारण मेरी पढ़ाई बन्द होने के कारण रह गए। यह परमजीत की कहानी है जो कि उसने मुझे बताई ताकि यह कहानी सबको पढ़ाई पूरी करने की सीख दे। आज भी हमारे समाज में लड़के और लड़की में भेदभाव किया जाता है। लड़का जब तक पढ़ना चाहे पढ़े लेकिन लड़की को कुछ पढ़ाकर उसकी शादी कर दी जाती है। जैसे इस कहानी में परमजीत के साथ हुआ उससे हमें यह सीख मिली है कि चाहे कुछ हो जाये हमें स्कूली शिक्षा पूरी करनी चाहिए।

बलविन्दर

अनाथ बच्चे

एक गांव में एक छोटा सा परिवार रहता था जिसमें दो बच्चे अपने माता-पिता और दादी के साथ रहते थे। बड़ी बेटी पायल दसवीं कक्षा में और छोटा बेटा रवि सातवीं कक्षा में पढ़ते थे। कोरोनाकाल की बात है जब पूरे देष में कोरोना नामक बिमारी फैलने की अफवाह उड़ रही थी सरकार ने स्कूल कालेज बन्द कर दिये थे लोगों को घरों में ही रहने के लिए कहा जा रहा था। परीक्षा परिणाम के बाद उनकी कुछ दिन की छुट्टियां हो गई कोरोना महामारी के कारण पूरे देश में लॉकडाउन हो गया और स्कूल की छुट्टियां एक महीने और बढ़ा दी गई और उन बच्चों की घर पर ही ऑनलाइन कक्षा होने लगी। उनके माता-पिता अपने काम करने घर से बाहर जाते तो मास्क, सेनेटाइज़र और दो गज की दूरी का ध्यान रखते।

कोरोना महामारी की पहली लहर में उनके परिवार में किसी को कोई परेशानी नहीं हुई और जनवरी 2021 में उनके स्कूल दोबारा खुल गए। वे केवल 3 महीने ही स्कूल गए थे कि कोरोना महामारी दोबारा आने और दूसरी लहर के कारण उनके स्कूल दोबारा बंद हो गए। इस बार माता-पिता जब काम पर जा रहे थे तो पिछली बार की तरह अपनी सुरक्षा का इतना ध्यान नहीं रख रहे थे। वे बाहर जाते तो मास्क भी नहीं लगाकर जाते थे और उन्होंने वैक्सीन भी नहीं लगवाई थी। रवि और पायल अपने माता-पिता वैक्सीन लगवाने और मास्क पहनने के लिए खूब समझाते पर वे नहीं मानते। अचानक उनके माता-पिता की तबीयत बिगड़ गई और टैस्ट करवाने पर पता चला की वे दोनों कोरोना महामारी के शिकार हो गए और उनकी अचानक मौत हो गई। अब रवि और पायल अपनी दादी के साथ रहने लगे उन्होंने अपने दादी को वैक्सीन लगवाई क्योंकि वे अब अपनी दादी की नहीं खोना चाहते थे और उनका अच्छे से ख्याल रखने लगे।

अनिशा यादव

बचपन

बचपन, जीवन का सबसे मस्ती भरा वक्त होता है। ऐसे ही एक बार तीन बच्चे एक मंदिर से खेलते-खेलते बहुत देर तक आगे जाते रहे। उन्हें पता भी नहीं लगा कि वो अपने मम्मी-पापा से कितना दूर आ गए। वो कभी पकड़म-पकड़ाई तो कभी बर्फ-पानी, बस खेलते गए और चलते गए। देखते ही देखते सूरज ढ़लने लगा और अंधेरा होने लगा। अब उन लोगों को डर भी लग रहा था लेकिन वो अपने मम्मी-पापा से बहुत दूर आ गए थे। उन्हें तो ये भी नहीं पता था कि वो कहां हैं। वो अपने मम्मी पापा को ढूंढने लगे। तभी थोड़ी दूर आगे जाने पर उन्हें एक पुलिस स्टेशन दिखा। वो वहां गए और उनको सब कुछ बताकर उनसे मदद मांगी। पुलिस ने खोजबीन करके उन बच्चों को अपने मम्मी-पापा के पास पहुंचा दिया।

अक्षिता

अनोखा जन्मदिन

हर साल हम मेरी दोस्त जिया का जन्मदिन की धूमधाम से ही मनाते थे, हर साल हम सब दोस्त उसके जन्मदिन का इन्तजार करते। हम सब दोस्त किसी अच्छे से होटल में जाते और वहाँ खुब मस्ती करते खाते-पीते केक काटते। लेकिन इस बार आयी कोरोना नामक एक खतरनाक महामारी। और आया मेरी दोस्त का अनोखा जन्मदिन। सोचो क्या हुआ होगा? जन्मदिन तो उसी दिन आया, लेकिन माहौल कुछ अलग था। हम उसका जन्मदिन धूमधाम से मनाते थे, हम टॉफी बाँटते थे, केक काटते थे लेकिन इस बार ऐसा कुछ भी नही कर सकते थे क्योंकि सब जगह लोक-डाउन जो लगा था। जब मैने उसे फोन किया, तो वो उदास थी। क्योंकि उसका जन्मदिन इस बार बेहद खास नहीं था। उसने कहा- ना कोई केक है, ना कोई टॉफी, ना कोई पार्टी और ना कोई दोस्त है। लेकिन मैने उसे समझाया - हम घर पर भी जन्मदिन मना सकते हैं अपने मम्मी-पापा के साथ। देश के डॉक्टर, पुलिस, सोशल वर्कर सभी अपनी जान खतरे में डाल कर देश को बचाने में लगे हैं ऐसे में अगर घर से कोई बाहर न निकले, तो कोरोना जा सकता है। अगर अपन बाहर नहीं जाएंगे, तो अपनी और उसकी जान खतरे में नहीं जाएगी। हम सब दोस्तों ने वीडियो कॉल करते हैं और जिया का जन्मदिन मनाया सब ने विडियों कॉल के माध्यम से उसको जन्मदिन की मुबारक बाद दी।

निवेदिता

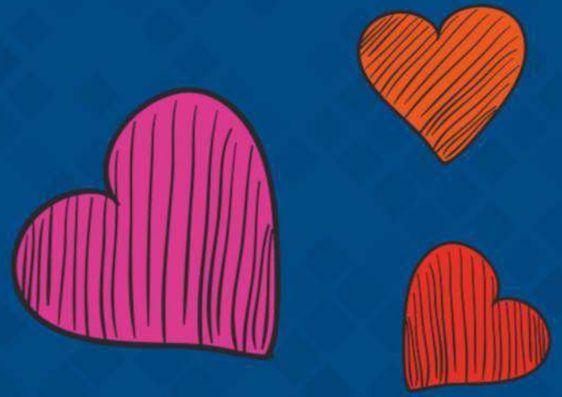

चिड़िया रानी

रोज सुबह जल्दी उठ जाती,
चूं-चूं खींची शोर मचाती।
आसमान में दिखती हो,
तारों जैसी चमकती हो।
बादलों में उड़ती हो,
दाना लेकर लौटती हो।
बच्चों के लिए खाना लाती,
और उसे तुम खुद भी खाती।

तुम हो बड़ी सयानी,
मुझको प्यारी चिड़िया रानी।
बच्चों पर हो हुकुम चलाती,
मेरी मां जैसी बनती जाती।
तुम भी स्कूल या ऑफिस जाती?
या घर पर ही रौब जमाती?
रोज सुबह जल्दी उठ जाती,
चीं-चीं चूं-चूं शोर मचाती।

निवेदिता

मेरी रचना
कितनी सुंदर

(x) = In x

मेरी रचना
कितनी सुंदर

मेरी रचना
कितनी सुंदर

मेरी रचना
कितनी सुंदर

शौचालय आये
सबके काम
बच्चे, बूढ़े
और जवान

मेरी रचना
कितनी सुंदर

मेरी रचना
कितनी सुंदर

मानव/जीवन

मेरी रचना
कितनी सुंदर

मानव/जीवन

गतिविधियाँ

दोस्तों के बिना जीवन कैसा

दोस्तों के बिना जीवन एकदम खाली खाली लगता है क्योंकि जब वो संग होते हैं कब समय कट जाता है पता ही नहीं चलता। उनके संग हम खेलते हैं, उन्हें अपनी बातें बताते हैं। मेरा एक बहुत अच्छा दोस्त है कृष्णा। वह मुझे अपना भाई मानता है। हम बहुत अच्छे दोस्त हैं। कोरोना में मेरे स्कूल के कई दोस्त दूर हो गए। हम मिल नही पाते थे और मेरा मन भी नहीं लगता था।

मेरे घर के आस पास मेरी उम्र के ही बहुत सारे लड़के रहते थे। मैं कभी उनसे बात नही करता था। एक दिन मेरी मां ने मुझे कहा कि जाओ उनके साथ खेलो, पर थोड़ा ध्यान से। तुम अंदर उदास बैठे रहते हो, वो सब भी तुम्हारे उम्र के ही हैं कब तक ऐसे उदास रहोगे।

तब मैं बाहर उनके पास गया और उन्होंने मुझे अपने साथ क्रिकेट खेलने को कहा।

ऐसे तो सभी मेरे दोस्त बने पर उनमें से मोहित मेरा बहुत अच्छा दोस्त बना। हम दोनों अपने बाकी दोस्तों के साथ साईकिल चलाते थे और बहुत मजे करते थे। कोरोना के इतने मुश्किल समय में भी मैं अपने दोस्तों के साथ खुश था। सच में, दोस्तों के बिना जीवन कुछ भी नही है।

हमारे जीवन में जैसे हर चीज़ का महत्व होता है उसी तरह दोस्त तो बहुत ही महत्व रखते हैं।

अश्विन एरियल

कोरोना पर जीत

मिलकर कोरोना को हराना है,
मिलकर कोरोना को हराना है।
घर से बाहर कहीं नहीं जाना है,
हाथ किसी से नहीं मिलाना है,
चेहरे के हाथ नहीं लगाना है,
मिलकर कोरोना को हराना है।

बार-बार अच्छे से हाथ धोना है,
सेनेटाइज करके देश को स्वस्थ बनाना है,
बचाव ही इलाज है, यह समझाना है,
मिलकर कोरोना को हराना है।
कोरोना से हमको नहीं घबराना है,
सावधानी रखकर, कोराना को मिटाना है,
देशहित में सभी को यह कदम उठाना है,
मिलकर कोरोना को हराना है।

इरफान शेख

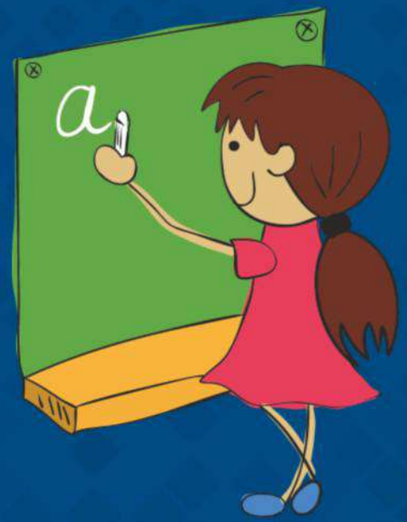

बेरोजगारी

यह कहानी रामपुरा गांव के एक गरीब परिवार की है। उस परिवार में मुखिया रामू और कुल सात सदस्य रहते हैं। रामू के चार बच्चे हैं - तीन बेटे, एक बेटी, एक बूढ़ी मां व रामू व उसकी पत्नी। रामू की उम्र करीब चालीस वर्ष है। वह दिहाड़ी मजदूरी करता है और उस मजदूरी से अपने घर का खर्च, बच्चों के स्कूल की फीस व बूढ़ी मां की दवाइयों का खर्चा भी चलाता है।

करीब बीस साल से रामू व उसकी पत्नी मजदूरी करके अपना घर चला रहे थे। बीस साल बाद रामू के तीनों बेटे बड़े हो गए और वे आगे की पढ़ाई करना चाह रहे थे। रामू अपने बच्चों के सपनों के लिए घर व गांव को छोड़कर शहर में मजदूरी करने लगा।

अब रामू के घर में रामू की मां, उसकी पत्नी व उसके चारों बच्चे रह रहे थे। शहर जाने के एक साल बाद तक रामू अपनी मजदूरी से हुई आय को गांव भेजता रहा जिससे उसके परिवार के लोग जीवनयापन कर सके। सब कुछ थोड़ा ठीक-ठाक चल रहा था, लेकिन नियति को कुछ और ही मंजूर था। तभी हमारे देश में कोरोना नामक बीमारी पैर जमाने लगी और पूरे देश में सम्पूर्ण लॉकडाउन लगाने की घोषणा कर दी गई।

उस समय जो लोग जहां थे वे लोग वहीं फंसे रह गये। इनमें रामू का भी यही हाल था, लेकिन रामू बेचारा क्या करता? उसे अपने परिवार की चिंता थी। रामू ने आव देखा ना ताव दिन-रात सड़कों पर पैदल चलकर किसी तरह वह गांव पहुंच गया।

जब रामू घर आया तो उसे पता चला कि उसके घर में खाने के लिए कुछ भी नहीं था। फिर भी गांव के लोगों ने आशा, भामाशाह की मदद से उसके परिवार के लिए खाद्य सामग्री व दोनों समय के खाने का इंतजाम कर दिया। कोरोना काल को देखते हुए रामू को एक साल बीत गया और जब फिर से देश में लॉकडाउन खुलने लगा तो रामू व उसकी पत्नी मजदूरी करने लगे। रामू व उसकी पत्नी कड़ी धूप में मजदूरी करके जैसे-तैसे अपने परिवार की गाड़ी पटरी पर लाने लगे और रामू ने किसी तरह अपने बड़े बेटे की पढ़ाई पूरी करवाई फिर बड़े बेटे ने अपने तीनों छोटे भाइयों और बहन को पढ़ाया और उनके सपनों को पंख देने की कोशिश में लग गया।

वर्तमान में रामू का बेटा नेटवर्किंग मार्केट में बिजनेस करता है और छोटे भाई-बहन पढ़ाई कर रहे हैं।

ज्योति पिंगोलिया

कोरोना का जीवन पर असर

कोरोना महामारी ने जग में ला दिया भूचाल,
इससे जन-जीवन हो गया बेहाल।
इंसान ने इंसान से दूरी बना ली,
देखा कोरोना का यह कमाल।
जीवन की रक्षा के लिये दूरी है जरूरी,
नहीं हमको इसका ख्याल।
मास्क पहनना, साबुन संग हाथ को धोना,
जिससे जीवन हो खुशहाल।
सैनेटाईज करना, दो गज दूरी रखना,
यही है जीवन की सच्ची देखभाल।
सरकारी गाईडलाइन का पालन है करना,
जिससे जीवन में हो खुशियों का धमाल।
बिना काम के घर से बाहर न जाना,
जिससे जीवन में न आये कोई बवाल।
वैज्ञानिकों के प्रयास से बनी देखो,
जीवन रक्षक वैक्सीन बेमिसाल।
कोरोना को भगाना है तो इन सबको अपनाना है,
जिससे जीवन खुशियों से हो मालामाल।

हिमांशु तंवर

आर्थिक स्थिति पर प्रभाव

तहसील कोलायत जिला बीकानेर (बीठनोंक) का रहने वाला एक परिवार जहां 4 बच्चे और उनकी मां लीला एक साथ रहते थे। उनके पिताजी को गुजरे हुए 25 वर्ष हो गये थे। पिता के गुजरने के बाद बच्चे पढ़ाई से वंचित हो गये और लीला का एक बड़ा लड़का सूरज 8वीं तक ही पढ़ सका। क्योंकि उसके पिताजी की मृत्यु के बाद घर की जिम्मेदारी बड़े लड़के पर आ गई थी।

इस वजह से सूरज अपनी पढ़ाई छोड़ कर अपने गांव से दूर शहर में किराना की दुकान पर काम करने चला गया। लीला और उसकी बड़ी बेटी दोनों गांव से 15 किमी दूर बजरी की खान पर मजदूरी करने चले गये। सूरज के दो छोटे भाई और थे वह घर पर ही रहते थे।

22 मार्च 2020 को पूरा परिवार कोरोना महामारी के चलते घर में कैद हो गया। यह परिवार रोजाना मजदूरी करके अपने घर का पालन पोषण करता था। लॉकडाउन की वजह से घर की आर्थिक स्थिति बहुत कमजोर हो गई घर में राशन पानी आना बंद हो गया।

लॉकडाउन की वजह से घर का राशन खत्म हो गया। कुछ दिन दुकानों से राशन उधार लेकर परिवार ने गुजारा किया। परिवार की आर्थिक स्थिति बहुत कमजोर थी उनके पास रहने को सिर्फ एक कच्चा मकान था। इस परिवार की दयनीय स्थिति को देखकर गांव के लोगों ने ग्राम पंचायत से, संस्था से, दानवीरों से इस परिवार को राशन उपलब्ध करवाया।

शिक्षा : आपातकालीन स्थिति में हमें गरीब परिवारों की मदद करनी चाहिए।

मिलन चौहान

कोरोना के दौरान भेदभाव

राजस्थान के टोंक जिले के एक छोटे से गांव में सुमित्रा देवी नाम की महिला अपने परिवार के साथ रहती थी। कोरोना महामारी के दौरान एक नजदीकी रिश्तेदार की शादी में जाने के बाद उन्हें खांसी एवं बुखार होने लगा। स्थानीय स्तर पर उन्होंने इसका इलाज भी करवाया साथ ही जिला अस्पताल में कोरोना की जांच भी करवाई जिसका परिणाम वह पॉजिटिव आ गई। यह खबर स्थानीय सरकारी अस्पताल के लोगों ने सबको बता दी। गांव में आकर सुमित्रा देवी एवं उनके परिवार को होम क्वारन्टाइन कर दिया एवं उल्लंघन करने पर कानूनी कार्यवाही का नोटिस दे दिया। गावं में यह पहला मामला था तो लोगों ने बातें बनाना शुरू कर दिया कि इनको तो पुलिस पकड़ कर ले जायेगी, अस्पताल में रखेंगे। जीवित वापस नहीं आयेंगे इत्यादि। गांव वालों एवं पडोसियों ने सुमित्रा देवी और उनके परिवार से बात करना बंद कर दिया। यहां तक की गली में आना जाना भी बंद कर दिया। दूध लेने जाते तो दूध वाला बर्तन को बहुत दूर रखवाता और किसी वस्तु से दूर से दूध देता, पास के बांव में स्थित किराना, मेडिकल व सब्जी वाले ने उन्हें सामान देने से मना कर दिया। चूंकि इतना सामान घर में नहीं था तो बहुत मुश्किलें होने लगी। आस पड़ोस के लोगों से मदद मांगने पर भी उन्हें कोई मदद नहीं मिली। इस दौरान सुमित्रा देवी एवं उनके परिवार को जिस सामाजिक बहिष्कार का मुश्किलों का सामना करना पड़ा वह बहुत असहनीय था। उनके परिवार ने सफाई और स्वास्थ्य का बहुत ध्यान रखा अन्ततः उनके परिवार के सभी सदस्यों की कोरोना रिपोर्ट नेगेटिव आने के बाद उन्हें फिर भी समाज द्वारा 2 माह तक बहिष्कार का सामना करना पड़ा। "हमें बिमारी से लड़ना है बिमार से नहीं" अपने आस-पास कोई कोरोना पॉजिटिव आ जाये तो सुरक्षा निर्देशों की पालना के साथ उसकी मदद करें। उसे भी प्यार, सम्मान एवं बिमारी से लड़ने के लिए हौसले की जरूरत है।

ऋषभ शर्मा

कोरोना का कहर

एक गांव में कालू और उसका परिवार रहता था। कालू के परिवार में उसकी पत्नी रमा और बेटा प्रेम और बेटी रिया रहते थे। उस समय गांव में कोरोना महामारी चल रही थी, पर कालू कोरोना महामारी को मजाक समझता था। कालू की एक किराना की दुकान थी। कालू लॉकडाउन में भी चोरी-चोरी दुकान पर जाता था और ज्यादा मंहगे दामों में राशन बेचता था।

एक दिन कालू को पुलिस ने पकड़ लिया। थोड़े दिन बाद जब कालू छूट गया तो फिर भी कालू नहीं माना। वो चोरी छिपे घर से दुकान चलाने लगा। एक दिन कालू के पास कोरोना पीड़ित व्यक्ति राशन लेने आया फिर आदमी ने जो मांगा वह कालू ने उसे दे दिया पर देते समय कालू का हाथ उस आदमी से लग गया और उस व्यक्ति को पहले कोरोना हो चुका है इस बारे में कालू को पता भी नही था।

कुछ दिन बाद कालू को खांसी जुखाम हुआ और उसे समझ नही आया कि उसे क्या हो गया। दूसरे दिन गांव में कैम्प लगा था कालू को उसका परिवार डॉ. के पास ले गये तो कालू और उसके परिवार के सदस्यों की रिपोर्ट कोरोना पॉजिटिव निकली और यह बात उनकी पड़ोसन बबली को पता चली। बबली ने यह बात पूरे गांव में फैला दी। जब कालू और उसका परिवार अपने घर वापस जा रहे थे सभी लोग उनसे डरने लगे दूर रहने लगे। कालू के घर में मानो जैसे कोई पहाड़ टूट पड़ा हो फिर कुछ दो-तीन हफ्तों बाद उसकी पत्नी की मृत्यु हो गई। धीरे-धीरे उसके पूरे परिवार में सभी की मृत्यु हो गई। कालू की एक छोटी सी गलती के कारण उसका परिवार तबाह हो गया।

हर्षिता यादव

एक नई दिशा

मार्च से पहले मैं प्रतिदिन स्कूल जाता था और फिर शाम को दोस्तों के साथ क्रिकेट भी खेलता था। एक दिन अचानक टेलीविज़न, अखबार, व्हाटसप में और धीरे-धीरे पूरे गांव में एक बिमारी के आने और लॉकडाउन लगने की ख़बर फैल गई। गांव में सभी बुर्जुग और बाकी लोग बिमारी के बारे में तरह तरह की बातें करने लगे, सब एक दूसरे की बातें सुन कर डरने लगे। सभी लोग बार बार हाथ धोने, एक दूसरे से दूर रहने और मुंह को ढक कर रखने की सलाह देते और दिन भर कोरोना बिमारी के बारे में चारों ओर बातें होती। दिन में आनलाइन क्लास की वजह से और शाम को न्यूज में लोगों के मृत्यु के आंकडे दिल दहला देते। सभी लोगों ने मुंह पर कपड़ा (मास्क) लगाना शुरु कर दिया और जो मास्क नहीं लगाते उन्हें घर के अन्दर भी नही आने देते।

कोरोना महामारी के कारण लॉकडाउन लग गया था तो स्कूल भी बंद हो गए और घर वाले भी दोस्तों को घर पर बुलाने के लिए मना करने लगे क्योंकि उनमें से कुछ दोस्त मास्क का उपयोग नहीं कर रहे थे। उनके घर के आस पास के पड़ोसी कोरोना संक्रमित हो गए फिर तो उनका हमारे घर पर आना बंद ही करना पड़ा इस कारण मेरा मन भी नही लगता था। लॉकडाउन के चलते स्कूल, खेल के मैदान, पार्क को बंद कर दिया जिस कारण खेलने नही जा पा रहा था और मेरे सारे खिलोने एक बैग में बंद रह गए। इन सब के चलते मैं भी परेशान रहने लगा। और मैंने इस परेशानी को दूर करने के बारे में सोचा।

इसी कारण कोरोना काल के चलते मुझे अपनी हॉबी में बदलाव करना पड़ा क्योंकि पहले मैं रोज शाम अपने दोस्तों के साथ क्रिकेट खेलता, घर से बाहर जाकर घूमता-फिरता था। लॉकडाउन के कारण मैं अपने दोस्तों से नही मिल पा रहा था तब मैनें एक व्हाटसप ग्रुप बनाया और क्रिकेट के बारे में व अन्य बाते किया करते। फिर मुझे लगा कि मैं इस ग्रुप के माध्यम से ज्यादा से ज्यादा अपने दोस्तों को कोविड-19 के बारे में जानकारी दे सकता हू। मैने अपने क्षेत्र में काम करने वाली संस्था से सम्पर्क कर कोविड के बारे में और जानकारी एकत्रित की तथा अपने ग्रुप में शेयर करने लगा- जिसमें मास्क लगाने, सामाजिक दूरी, कोरोना के लक्षण होने पर डॉक्टर के पास जाने जैसी बातें वेक्सीनेशन के लिए रजिस्ट्रेशन कराने, आदि के बारे में बताता रहता। मैने अपने मोबाइल से कोरोना से संबंधित सही जानकारी निकाल कर अपने आस पास के और घर के लोगों को बताना शुरु कर दिया और अपना समय बिताने लगा, मैं दोस्तो के साथ नहीं खेल पाने का दर्द तो महसूस करता रहा परन्तु लोगों को समय-समय नयी-नयी जानकारियाँ देकर अपने आप को रोमांचित महसूस करने लगा।

दोस्तों को मोबाइल के द्वारा क्रिकेट की जानकारी भी देता रहा जिससे उनको सीखने का मौका मिल रहा था।

पार्थ बैरवा

स्केटर जीनी

जीनी एक होनहार और उर्जा से भरी लड़की है जिसे स्केटिंग और रोल बॉल खेलना बहुत पसंद है। पिछले तीन सालों में उसने कई टूर्नामेंट खेले और जीते। लोगों ने भी उसे बहुत प्यार दिया। लेकिन फिर आया रियल लाइफ विलन कोरोना... पूरे देश, शहर और गाँव की गलियाँ सूनी पड़ गई। जहां वो रोज सुबह-शाम अभ्यास करती उस स्टेडियम में भी उसे अभ्यास करने से मना कर दिया गया।

अब वो घर में अपने मेडल, स्केट्स और बॉल को देखकर वह उन दिनों को याद करती जब वह अपने दोस्तों के साथ खेलती थी। रोज शाम 4 बजे, भले ही उस वक्त कड़कती धूप हो या जमा देने वाली ठंड, जीनी स्टेडियम जरूर जाती। अपने दोस्तों के साथ बातें करती और खूब खेलती।

पूरा एक साल ऐसे ही निकल गया।

वो हर दिन ये सोचकर सोती कि हो सकता है कल ये सब खत्म हो। अगले दिन वो नींद में अपनी मम्मी की आवाज सुनती है- जीनी जल्दी नाश्ता कर स्टेडियम निकलना है, वह खुशी से पागल सी हो जाती है लेकिन तभी उसे एक और आवाज सुनाई देती - जीनी उठ जा बेटा, आज पोंछा लगाने की बारी तेरी है।

अक्षिता

कोरोना काल में किया कुछ नया

बारां जिले के किशनगंज कस्बे के एक छोटे से गांव में एक लड़की रहती थी, जिसका नाम सोना था। 12वी कक्षा में अच्छे अंको से पास होकर माता-पिता के सहयोग से सोना ने कालेज में प्रवेश लिया। सोना प्रतिदिन बस से 20 किलोमीटर दूर कालेज आती जाती थी, सोना अपने गांव में अकेली लड़की थी जो कालेज में पढ़ने जाती थी। गांव के सब लोग उसे बहुत प्यार करते थे क्योंकि वह सबकी मदद करती थी।

कोरोना काल से पहले तक जिन्दगी व्यस्त थी, घर से कालेज और कालेज से घर। कोविड-19 की वजह से हमें कई समस्याओं का सामना करना पड़ा, गांव में अधिकांश लोग अशिक्षित, खेतीहर मजदूर दिहाड़ी मजदूर थे, काम नहीं मिलने के कारण उनकी आर्थिक स्थिति कमजोर होती जा रही थी। कुछ परिवारों में विशेषकर महिलाओं व लड़कियों को कई तरह की समस्याए भी आ रही थी । सब सोना के पास आते और कुछ मदद की आशा करते। सोना भी उन सबकी मदद करना चाहती थी। उसने इंटरनेट के माध्यम से ऑनलाइन कार्यक्रमों के बारे में जाना। सरकार व क्षेत्र में काम करने वाली संस्थाओं से सम्पर्क कर गांव की समस्याओं के बारे में अवगत कराया। फिर क्या था, सरकार ने स्थानीय संस्था की मदद से गांव में सहयोग करने के लिए सोना को जिम्मेदारी दे दी। सोना इन्टरनेट व संस्था की मदद से गांव के लोगों की मदद करने लगी। संस्था के सहयोग से सोना ने अपने गांव में बच्चों का पढ़ाने का काम भी करने लगी। कुछ पल ऐसे भी मिले जिससे हमने अपने परिवार के साथ समय गुजारा और हमारे अन्दर के गुणों को पहचाना। सोना बताती है कि "कोरोना के समय इंटरनेट ने ही हमारी सहायता की है चाहे वो स्कूल की पढ़ाई हो, ऑफिस का काम हो या हमें नया-नया सीखना हो या मनोरंजन करना हो। मैने कुकिंग भी सीखी है, यूट्यूब पर देख-देख कर मैंने छोले भटूरे, समोसे, गुलाब जामुन बनाये और मेरे परिवार को भी खिलाया।" इन्टरनेट के माध्यम से सोना गांव के बच्चों को ऑनलाइन शिक्षण का कार्य करवाती किसी को भी कोई मदद की आवश्यकता होती तो सोना उसको हल करने में मदद करती। कोरोनाकाल में वैसे तो सब कुछ बुरा हुआ है किंतु हमें हमेशा सकारात्मक सोचना चाहिए और उस परिस्थिति में ऐसा क्या किया जाए जिससे हम खुश रहें और हमारे आसपास के लोगों को भी खुश रख सकें इसके बारे में सोचना चाहिए।

सलोनी ठाकुर

बचपन भी एक जमाना था

एक बचपन का ज़माना था, जहाँ खुशियों का खजाना था।

चिंता नाम का जिक्र न था, जीवन अपना आशियाना था।

दिन भर गोद में रहने की चाहत थी, वो पल भी कितना सुहाना था।

चाहत चाँद को पाने की थी, पर दिल तितली का दिवाना था।

खबर न थी सुबह की, न शाम का ठिकाना था।

उन रेत के ढेरों से सुन्दर-आशियां बनाना, वो दोस्तों से झगड़ना, वो रूठना-मनाना।

वो परीक्षा की घड़ियां थी, वो थक कर स्कूल से घर आना।

दादी की कहानीयॉ थी, खेलने भी जाना था।

बारिश में कागज की नाव थी, हर मौसम सुहाना था।

रोने की वजह न थी, न हँसने का बहाना था।

क्यों हो गये इतने बड़े हम, जी रहे हैं लेके इतने भ्रम।

सोचता हूँ आज नहीं तो कल अपना जमाना होगा।

फिर से ज़िंदादिली का कोई बहाना होगा।

फिर से चेहरे पर खिलखिलाती हुई मुस्कान होगी,

लेकिन क्या फिर से वही जिंदगानी होगी ?

इस आधुनिकता के खेल में भी मुझे, अपने बचपन की याद आती है

वो गुजारे हुए हसीन लम्हों की यादें तरसाती है, सच में वो सबसे प्रिय अफसाना था।

वो बचपन का जमाना था, वो बचपन का जमाना था।।

शिवांनी शर्मा

जलेबी

देखी जबसे गोल जलेबी
मन है डाँवाडोल जलेबी
घी के अन्दर गिर यह फूली
उसके ऊपर तैरी झूली

नहा चाशनी में इठलाई
थाली में यह सज धज आई
भरी चाशनी मीठी-मीठी
अंदर पोलम पोल जलेबी

देखी जबसे गोल जलेबी
मन है डाँवाडोल जलेबी
गणपत, अक्षय, चित्रा, आओ
शिला, सुषमा, प्रज्ञा खाओ

छोटे बड़े सभी को भाए
बूढ़े और युवा ललचाए
ऐसी है अनमोल जलेबी
मीठी मीठी गोल जलेबी।

लाली निनामा

बेरोजगार होना

यह कहानी जयपुर शहर के मुण्डवाड़ा गांव मे रहने वाले एक निर्धन परिवार के रामू की है। रामू अपनी पत्नी कमला व उसके बेटे रमेश के साथ रहता था। रामू चाचा बहुत शराब पीते थे जिस कारण वह बिमार रहते थे और कमला चाची पड़ोस के घरों में जाकर झाडू पोछा करती थी। जो भी आमदनी प्राप्त होती वह उससे अपने घर का खर्चा चलाती थी। रामू चाचा कुछ काम नहीं करते थे वह और ज्यादा बिमार रहने लगे। वह हमेशा चारपाई पर ही लेटे रहते थे। चाची पड़ोस वाले घरों में जाकर झाडू पोछा लगाकर अपना घर चलाने के साथ साथ अपने पति का इलाज भी करवातीं।

कोविड-19 में लॉकडाउन लगने की वजह से सभी लोग यह समझते कि चाचा जी कोरोना वायरस के शिकार हो गये। इस डर से पड़ोसियों ने कमला चाची को अपने घर में आने नहीं दिया जिस कारण वो अपने घर का खर्चा नहीं चला पा रही थी। कमला का परिवार भूख से परेषान होने लगा। उसी गांव में राखी चाची भी रहती थीं। वह बहुत धनवान थी। एक दिन राखी चाची जब कमला चाची के घर के पास से गुजर रही थी। तब उनके परिवार की हालत देखकर चाची जी ने कमला चाची की मदद की उन्हें राषन, बाकी जरूरत का सामान और घर के लिए खर्चा दिया। राखी चाची ने रामू चाचा के इलाज के लिए हॉस्पिटल ले जाने में भी मदद की। राखी चाची ने कमला के बेटे रमेश के लिए कुछ किताबों का इंतजाम किया जिससे वह पढ़ सके।

राखी चाची ने कमला चाची की लॉकडाउन जैसे मुशकिल समय में मदद कर उन्हें कई बड़ी परशानियों से बचा लिया। लॉकडाउन के नियमों का पालन करते हुए राखी चाची ने मदद भी की और अपने स्वास्थ्य का भी ध्यान रखा। गांव में बाकी लोगों को भी राखी चाची ने जागरूक किया और रामू चाचा भी धीरे धीरे स्वस्थ होने लगे।

प्रियंका भावरीया

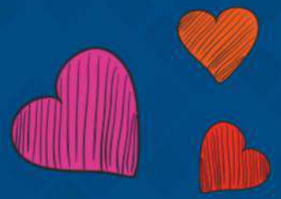

राहत मिली

एक गांव में दीपलाल नाम का व्यक्ति रहता था। उसके परिवार में उसकी पत्नी कुसुम और 6 साल की बेटी प्रिया रहती थी। दीपलाल एक ठेकेदार के पास काम करता था और ठंडे पानी, जूस का ठेला लगाता था। दीपलाल रोजाना चिलचिलाती गर्मी में अपना ठेला लेकर काम पर निकल जाता था। एक दिन उसकी दुकान पर एक ग्राहक आया और फोन पर बात करते हुए कहता है कि "दो दिन बाद लॉकडाउन लगने वाला है, आज ही जरूरी सामान खरीदने जाना है"। दीपलाल को कुछ समझ नहीं आया कि वह व्यक्ति क्या बात कर रहा था पर उसकी दुकान पर रखे रेडियो में दीपलाल ने समाचार के माध्यम से सारी बात समझली और जल्दी जल्दी अपने ठेकेदार के पास गया और उसका ठेला उसे लौटाकर अपनी मजदूरी के पैसे मांगे जिसमें उसे दिन के तीन सौ रुपये मिले। उन रुपयों से दीपलाल ने महिने भर का राशन खरीद लिया। दीपलाल की पत्नी ने बहुत सूझबूझ से महिने भर के राषन को अच्छे से चलाया। उस समय कोई दुकाने नही खुली थी और सब्जीयां भी नही मिल रही थी तब फिर उसने फैसला किया वह सब्जीयां और कुछ खाने का सामान अपने घर के सामने एक खाली जगह में उगायेगा और जब तक वह सब्जीयां उगती तब तक गांव वालों ने उसे कुछ राशन दिया और इसी तरह दीपलाल का लॉकडाउन आराम से गुजर गया। लोगों की मदद मिलने से दीपलाल को जो राहत मिलि उससे उसके परिवार में कोई परेशानी नही हुई

विशाल यादव

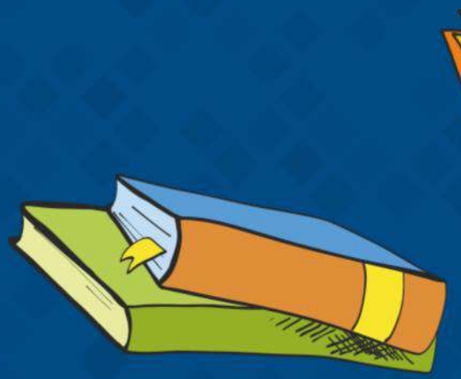

गतिविधियाँ

गतिविधियाँ

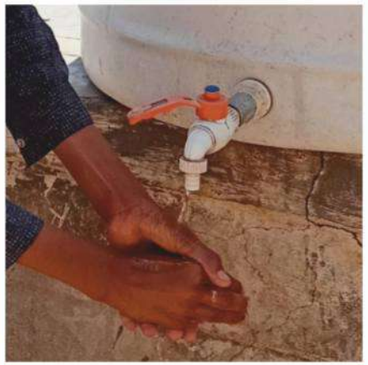

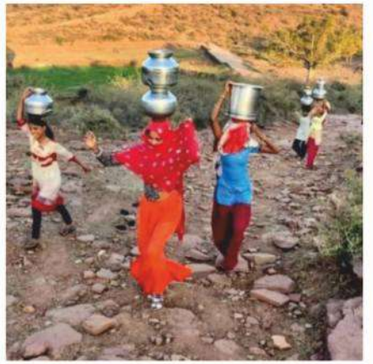

गतिविधियाँ

गतिविधियाँ

गतिविधियाँ

मेरी रचना
कितनी सुंदर

गतिविधियाँ

प्रकृति/पर्यावरण

प्रकृति का नियम

एक शिक्षक अपने विद्यार्थियों को प्रकृति के नियमों की प्रयोगात्मक शिक्षा देने के लिए विद्यालय के लेब में लेकर जाता है। सभी विद्यार्थी बड़ी उत्सुकता के साथ इस प्रयोग में भाग लेते हैं।

उस लेब में शिक्षक ने तितली के दो छोटे-छोटे अंडे रखे थे। जिनमें से कुछ ही समय में बच्चे बाहर निकलने वाले थे। उन अंडों के अंदर के बच्चों की सारी हलचल वहां लगे कम्प्यूटर पर दिखाई दे रही थी, जिसमें तितली का बच्चे अंडे से धीरे-धीरे बाहर आते हैं। उनमें से एक तितली पंख हिलाने का प्रयास करती है पर उड़ नहीं पाती और दूसरी तितली कुछ ही देर में इधर-उधर उड़ना शुरू कर देती है। सभी बच्चे उसे देखकर बड़ा खुश हो जाते हैं।

शिक्षक विद्यार्थियों को समझाता है- संघर्ष प्रकृति का नियम है। जब भी कोई जीव या व्यक्ति संघर्ष करता है, तो उसके अंदर छुपे हुए बहुत से गुण निखरकर बाहर आ जाते हैं। वह बताता है कि पहले वाला बच्चा अंडे से जल्दी और आसानी से बाहर आ गया इसलिए उसमें बाहर के माहौल में जीने के गुणों का विकास नहीं हो पाया। जबकि दूसरे बच्चे ने संघर्ष किया और अपने आपको इतना मजबूत बना लिया कि वह बाहर की दुनिया में जी पाए।

सीख - जरूरत से ज्यादा मदद हमें हमेशा के लिए उन गुणों से दूर कर देती है, जो हमारे अंदर है। यही प्रकृति का नियम है।

हरिओम बैरवा

मैं आशियाना ढूंढती हूँ

जीने का बहाना ढूंढती हूँ, मैं घर में ही आशियाना ढूंढती हूँ।

कद्र करे, जो मेरी दिल से सच्ची, आज तक मैं वो जमाना ढूंढती हूँ।

मुझसे ही है, धरा पर मौसम बहारों का, बिन मेरे कोई मजा नहीं, जहां में नजारों का।

वैसे तो हूँ मैं खुद ही तरन्नुम, पर गुनगुनाने को कोई तराना ढूंढती हूँ।

मेरी वजह से ही धरा पर, ये अनोखा जीवन, मैं भी लूं आनंद ज़िंदगी का, चंचल है मेरा ये मन।

मत समझो ए जमाने वालों मुझे तुम काला टीका, बिन मेरे तो रह जाता, हर एक तीज त्यौहार फीका।

बांटती हूँ मैहर और रूह को प्राणों की रोशनी, मैं ही लिखती सारे जग की कहानी।

जीने का बहाना ढूंढती हूँ, पर मैं जग में खुद का फसाना ढूंढती हूँ।।

पार्थ

मेंढ़क का साहस

रविवार का दिन था। सीता पढ़ रही थी। अगले दिन उसकी परीक्षा थी। उसका छोटा भाई विमल उसको देख कर हंस रहा था क्योंकि वह पढ़ने में बहुत कमजोर थी।

सीता के दादाजी सारी बात समझ गये थे।

रात को सोने से पहले विमल ने कहा- दादाजी कोई कहानी सुनाइए!

दादाजी ने कहानी सुनाना शुरू किया।

बहुत समय पहले की एक बात है। एक तालाब में बहुत सारे मेंढ़क रहते थे। तालाब के बीच में लोहे का एक ऊंचा और चिकना खम्भा लगा हुआ था।

एक दिन सब मेंढ़कों ने मिलकर विचार किया कि हम एक खेल खेलते हैं। इस खम्भे पर जो मेंढ़क चढ़ जाएगा वह इस तालाब का राजा कहलाएगा। सभी तालाब के मेंढ़कों ने भाग लिया, पर कोई नहीं चढ़ पाया। एक छोटा मेंढ़क बोला मैं भी इस खेल को खेलना चाहता हूं। सब मेंढ़क हंसने लगे। हम तो नहीं चढ़ पाए..... तू क्या इस खम्भे के ऊपर चढ़ पाएगा? बड़ा आया राजा बनने।

छोटा मेंढ़क धीरे-धीरे खम्भे के ऊपर चढ़ने की कोशिश करने लगा। वह बहुत बार नीचे गिरा और फिर उठ कर खम्भे में चढ़ने की कोशिश करता रहा। इतनी कोशिशों के बाद वह अंत में ऊपर जा पहुंचा और इस तालाब का राजा बन गया जबकि दूसरे मेंढ़कों ने खंभे में चढ़ने को मजाक में ले लिया, और राजा बनने की कोशिश भी नहीं की।

कहानी के खत्म होते ही विमल ने अपनी बहन से माफी मांगी और उसे ये बात समझ आ गयी कि किसी पर भी हंसना नहीं चाहिए, कोई भी कमजोर नहीं होता।

गुड्डी चरपोटा

लॉकडाउन में पशुओं से लगाव

हमारे परिवार में कुल सात पशु हैं जिसमें एक गाय, एक भैंस उनके एक-एक बच्चे, एक बकरी और उसके दो छोटे बच्चे हैं। इन सबकी देखरेख मेरी मां किया करती हैं।

लॉकडाउन के कारण हम परिवार के सभी सदस्य घर पर रहने लगे। मां का काम और भी बढ़ गया। शुरु में काम को लेकर हम भाई बहनों में झगड़ा होता था। मां अकेले सारा काम कर के थक जाती थी वो पशुओं की देखभाल करतीं, हम सभी के लिए खाना बनाती, और घर के अन्य काम भी संभालतीं थी।

कुछ समय बाद मां थोड़ा बिमार रहने लगी। हम सभी ने फिर तय किया कि मिल कर मां की मदद करेंगें। हम सबने पशुओं की देखभाल करना शुरु किया और साथ ही घर के काम में भी मां की मदद करने लगे। सभी पशुओं को समय पर चारा, पानी मिलने लगा।

पहले मां अकेली घर का सारा काम करती थी जिस कारण पशुओं को चारा समय पर नही मिल पाता था। पशु माता की तरफ देखते रहते और सोचते कि कब पानी मिलेगा, कब छांव मिलेगी।

अब लॉकडाउन की वजह से घर में सभी सदस्यों की मौजूदगी से मां घर का काम संभालती और हम पशुओं पर ज्यादा ध्यान देने लगे। उन्हें समय पर चारा खिलाना, पानी पिलाना, स्नान करना, छांव में बांधना, समय पर सभी चीजें मिलने के कारण दूध पहले से ज्यादा मिलने लगा।

हमारे पास एक बकरी है जिसका नाम झलनी है और उसने लॉकडाउन के दौरान दो बच्चों को जन्म दिया। वो बहुत ही प्यारी और सुन्दर हैं और हमारे साथ उछल कूद भी करते हैं। इस दौरान पशुओं के साथ खेलने और उनका ध्यान रखने के कारण लॉकडाउन में हमें उनसे पहले से ज्यादा लगाव हो गया।

गजल चौहान

पायल की बकरी

एक गांव में पायल नाम की बच्ची रहती थी। उसके पास बहुत सारी बकरीयां थी जिसमें से एक बकरी ने एक मेमने को जन्म दिया। पायल ने उस मेमने का नाम फूला रखा। फूला की मां उसे जन्म देते ही मर गई। जिसकी वजह से पायल को बहुत दुःख हुआ क्योंकि वह उस छोटी बकरी को दूध नहीं पिला पायी। इसलिए उसके पास जो और बकरियां थी वह उनका दूध निकालकर उस बकरी को बोतल से दूध पिलाया करती थी। जब वह धीरे-धीरे बड़ी होने लगी तो वह पायल के पास ही रहने लगी। पायल उसको अपने पास ही सुलाती व उसका बहुत ख्याल रखती थी। वह उसे चारा, पानी और दाना सही वक्त पर खिलाती थी। एक बार पायल की बकरी बहुत बीमार हो गई जिस कारण पायल बहुत परेशान हो गई।

लॉकडाउन के दौरान फूला पायल के लिए एक मात्र दोस्त थी। पायल फूला के ईलाज के लिए अपने गांव के निजी अस्पताल के डॉक्टरों के पास गई लेकिन वहां फूला का ईलाज सही तरीके से नही हो पाया। इसलिए वह शहर के बड़े अस्पतालों में फूला को ले कर गई। वहां फूला का अच्छी तरह से ईलाज हुआ, जिससे वह कुछ दिनों बाद ठीक हो गई। पायल अपनी बकरी को ठीक होते हुए देख और उछल कूद करते हुए देख बहुत खुश हुई। फूला पायल के लिए परिवार का एक सदस्य थी। फूला स्वस्थ होने के बाद अपने परिवार के साथ खुशी खुशी रहने लगी।

शिक्षा - हमें भी अपने जानवरों के साथ अच्छा व्यवहार करना चाहिए और उनका ख्याल रखना चाहिए जिससे वह खुश रह सकें।

मनिषा चौधरी

शेर और तीन बैल

तीन बैल आपस में बहुत अच्छे दोस्त थे। वे साथ मिलकर घास चरने जाते और बिना किसी राग-द्वेष के हर चीज आपस में बांटते थे। एक शेर काफी दिनों से उन बैलों के पीछे पड़ा था, लेकिन वह जानता था कि जब तक ये तीनों एकजुट हैं तब तक वह उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकता। षेर ने कई बार उन तीनों की दोस्ती तोड़ने की कोशिश की और हर बार वो तीनों मिलकर षेर को हरा देते।

एक दिन शेर ने उन तीनों को एक दूसरे से अलग करने की चाल चली।

उसने उन तीनों की अफवाहें फैलानी शुरू कर दी। अफवाहें सुन-सुनकर उन तीनों के बीच गलतफहमी हो गई। धीरे-धीरे वे एक-दूसरे से जलने लगे। आखिरकार उनमें झगड़ा हो ही गया और वे अलग-अलग रहने लगे।

शेर के लिए यह बहुत अच्छा अवसर था। उसने इसका पूरा लाभ उठाया।

एक दिन शेर ने बैलों को अकेले चरते हुए देख, एक एक कर तीनों बैल के पास गया और तीनों को उसने मार डाला।

सीख :- एकता में ही शक्ति होती है।

कांकू मीणा

ढ़लती हुई शाम

कुछ बयां करती है ये ढ़लती हुई शाम,
पंछी लौटते हैं अपने आशियानों में।
अपने नन्हे चूजों के लिए दाना-पानी लिए,
मजदूर लौटते हैं अपने घरों के लिए।
दिन भर की मेहनत की थकान लिए,
चरवाहे लौटते हैं अपनी गायों को लिए।
मुसाफिर/राहगीर फिरते हैं अपने,
आश्रय की उम्मीद के लिए।

आसमान में छा जाती है लालिमा,
मानो किसी ने बिखेर दिया हो सिंदूर-सा आसमान में
सूरज भी जाने लगता है अपने गंतव्य की ओर।

आशाओं से भरी होती है, ढ़लती हुई शाम,
मन में नया उत्साह जगाती है, ढ़लती हुई शाम,
सदैव बढ़ते रहने का पथ दिखाती है, ढ़लती हुई शाम,
काफी कुछ सीखा जाती है, एक ढ़लती हुई शाम।

नरेन्द्र पिंगोलिया

मदद करना

11 वर्ष की माया एक छोटे से गांव में, एक छोटे से घर में रहती है। उस घर में एक खिड़की है और वह खिड़की के अन्दर से हर दिन बाहर देखती है। उस रोशनदान में एक कबूतर आया करता था। माया उस कबूतर को रोज खाना पानी देती थी। कोरोना महामारी के कारण जब माया स्कूल नही जा पा रही थी तब माया ने सोचा कि क्यूं ना मैं एक पेड़ के नीचे बैठकर पढ़ाई करूं। तभी माया ने अपनी पुस्तकें उठाई और एक गहरी छाया देने वाले पेड़; जो कि उसके घर के बाहर था- वहां जाकर पढ़ाई करने लगी। कुछ देर के पश्चात् माया को कुछ पक्षी दिखे। वे पेड़ पर अपना घोंसला बना रहे थे। तभी, थोड़ी देर बाद माया को जमीन पर एक पक्षी गिरा दिखाई दिया, जो भूखा प्यासा था। प्यास के कारण वह उड़ भी नहीं पा रहा था। माया ने उसे उठाया और अपने घर ले आई।

कमजोर पक्षी को माया ने पानी पिलाया, कुछ दाने खाने के लिए भी दिये। कुछ समय बाद कमजोर पक्षी ठीक हो गया था और अब वह पक्षी उड़ भी सकता था। माया को बहुत खुशी हुई कि कमजोर पक्षी ठीक हो गया है। माया ने सोचा कि जीव जन्तुओं को पानी की आवश्यकता है और उसने अपने घर के आस-पास, अपने घर की छत पर और अपने बगीचे के पेड़ों पर पक्षियों के लिए पानी की व्यवस्था की।

माया ने अपने आस-पास के लोगों को भी जागरुक कर दिया कि वे भी अपने आस-पास के पेड़ों, बगीचों में पक्षियों के लिए पानी की व्यवस्था करें। माया व उसके दोस्तों ने मिलकर इस कार्य को करने में एक दूसरे की मदद की।

रूकसाना बानो

रज्जो रानी का प्यार

बासनी गांव में शुभम नाम का एक किसान रहता था। उसके परिवार में उसकी पत्नी मीना और उसके दो पुत्र अमित व रवि रहते थे। उसके पास एक गाय थी जिसका नाम रज्जो था। शुभम की गाय रज्जो दिखने में बहुत ही सुन्दर थी। उसकी आंखे बड़ी-बड़ी व नम हुई दिखाई देती रज्जो एक दम सफेद रंग की थी और उसका कद थोड़ा ऊँचा था लेकिन रज्जो बहुत कम दूध देती थी। शुभम की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। शुभम चाहता था कि रज्जो के दूध से वह मिठाई बनाकर कोई कारोबार शुरू करे लेकिन रज्जो इतना ही दूध देती थी कि उसकी रोजी-रोटी की जरूरत पूरी हो जाये और उसके पुत्र अमित व रवि भी पी पाये इसलिए शुभम अपनी रज्जो को रोज पास के गांव के खेतों में चरने के लिए ले जाता था। एक दिन रज्जो घास चरते-चरते थोड़ी दूर निकल गई। उस दिन उसे वहां पर एक बछड़ी दिखाई दी जो अकेली बैठी थी रज्जो उसके पास गई और उससे उसका नाम पूछा उसने अपना नाम रानी बताया रज्जो ने रानी को ऐसी गंभीर हालत में देखा रानी की आंखों से आंसुओं की बून्दे गिर रही थी और रज्जो ने आश्चर्य से रानी को पूछा तुम्हारी मां कहां है और तुम यहां कैसे पहुंची। रानी जो रो रही थी धीरे से बोली मेरी मां ने मुझे बाहर घास चरने के लिए मना किया था पर मैने मेरी मां की बात नहीं मानी और मैं बाहर निकल आई। घर से बहुत दूर पहुंच गई। अब मैं क्या करूं। इतना सुनते ही रज्जो ने रानी को अपने पास बिठा दिया। रानी ने रज्जो से कहा मुझे बहुत भूख लग रही है। रज्जो इतना सुनते ही रानी को दूध पिलाने लगी और रज्जो ने रानी से कहा तुम बहुत सुन्दर दिखती हो। तुम्हारी आंखे देखकर बहुत मासूमियत झलकती है और तुम्हारे कान बहुत छोटे-छोटे व सुन्दर दिखते हैं। इतना सुनते ही रानी की आंखों से पानी आ गया वो रोने लगी रज्जो ने रानी से पूछा तुम्हारी आंखों में ये दर्द कैसा क्या बात है? रानी दुख भरी आवाज में कहने लगी ऐसे ही मेरी मां मेरी तारीफ किया करती थी रानी की बात सुनकर रज्जो का भी मन भर आया। रानी ने रज्जो से कहा क्या मैं तुम्हे अपनी मां बोल सकती हूं ? इतना सुनकर रज्जो का मन बहुत खुश हुआ और रज्जो ने रानी से पूछा और तुम्हें क्या चाहिए। रानी ने कहा मुझे बहुत भूख लग रही है रज्जो ने रानी को दूध पिलाया और आपस में बातचीत करने लगी। यहां कितनी हरियाली है लगता है अच्छी बारिश हुई है। हमारे खाने के लिए बहुत सारी घास बड़ी हो रही है। चलो चल कर खाते हैं रज्जो रानी से बहुत प्यार करने लगी थी और रानी भी रज्जो को अपनी मां मानने लगी थी। रानी भी रज्जो को अपनी मां मानने लगी थी।

भारतीय समाज में गाय को गौ माता कहा जाता है। शास्त्रों के अनुसार ब्रह्मा जी ने जब सृष्टि की रजना की थी तो सबसे पहले गाय को ही पृथ्वी पर भेजा था। आयुर्वेद के अनुसार भी मां के दूध के बाद बच्चों के लिए सबसे फायदेमंद गाय का ही दूध होता है।

पल्लवी शर्मा

एक झलक

एक बार की बात है मैं कहीं घूमने गया हुआ था हमने वहां पर कई सारी चीजें और नजारे देखें। वह काफी मनोरम पल था जिस वक्त मेरी नजर उस बड़े से लकडी के बने दरवाजे के बाहर पड़ी। वहां पर घूमने वालों के लिए एक लम्बा चौड़ा सड़कनुमा रास्ता बनाया हुआ था। वहाँ विश्राम के लिए बडी-सी कुर्सी भी लगाई गई थी। आसमान में खाली सफेद बादलों को चीरकर आती सूरज की किरणों मेरे मन को आकर्षित कर रही थी। सुबह का समय था, मौसम ठंडा और सुहाना था। वहां बंदर भी उस मौसम का लुत्फ उठा रहे थे।

कभी एक जगह बैठकर कुछ देखते तो कभी ऊंची-ऊची छलांगे मारते हुए वहां से भाग जाते। वहां जो भी घूमने आता अपना सारा खाने-पीने का सामान साथ में लाता। उस आगे वाली बेंच पर कोई अपना बेग भूलकर चला गया था।

अब धीरे-धीरे दिन चढ रहा था और वह मन को मोहने वाला भ्रम बादलों में से निकलते सूरज के सामने झुकने लगा था। पेड़ अपने पत्तों को फैलाकर इसकी शुरूआत कर रहे थे। मुझे वो एक झलक आज भी उस मौसम, उस जगह की याद दिलाती हैं, जहां पहाड़ों को छूते बादल बड़े-बड़े किनारों के पेड़ वहां की शोभा को बढा रहे थे।

विकास बैरवा

शाम का अहसास

शाम बड़ी सुहानी होती है,
सबके मन को भाने वाली होती है।
आसमान में लाली होती है,
चारो ओर रंग खिलाती है।

शाम होते ही पक्षी घर को जाते है,
सवेरा होते ही दाना चुगने जाते हैं।
लोग घूमने के लिए घरों से बाहर आते हैं,
और प्रकृति की मनोहर सुंदरता को देख प्रफुलित हो जाते हैं।

नगीना यादव

सवेरा

सूरज की किरणें आती हैं, सारे जग को महकाती हैं।
डाली लहराती है मस्तानी, नया सवेरा नई कहानी।
देखो कैसे लहराता है पानी, ठंडी ठंडी हवा सुहानी।
नया जोश पाते सब प्राणी, सुबह मेहनत लगती है प्यारी।

अंधेरा सब खो जाता है, हमारा जग सुंदर हो जाता है।
मौसम सुनहरा हो जाता है, देखो हमारा जग सुंदर हो जाता है।
ये है ईश्वर की मेहरबानी, यही है हमारे जीवन की कहानी,

सोनम कुशवाहा

मानसून की बारिश

गर्मी के मौसम में दोपहर का वक्त था बादलों के पीछे सूर्य छिपा हुआ सा दिख रहा था। चारों ओर पेड़ सूखे और पत्तियां जमीन पर गिरी हुई थी। हरे भरे जंगल में एक पेड़ की शाखाएं बुरी तरह से मुड़ी हुई थी। तेज गर्मी और पानी की कमी से पेड़ सूख गया था जिस कारण सभी पेड़ उस पेड़ का मजाक उडाते थे। बाकी पेड़ हमेशा उस पर चिल्लाते थे जिससे वह पेड़ बहुत दुखी रहता था। वो हमेशा सोचता था कि काश मैं भी बाकी पेड़ों की तरह सुन्दर होता। मुझे ऐसा क्यूं बनाया, ना तो मैं किसी को छाया दे सकता हूं और ना पक्षी मुझ पर घोंसला बना सकते हैं। मेरी किसी को जरूरत भी नही है।

एक दिन सुबह-सुबह उस जंगल में एक लकड़हारा आया उसने पेड़ों पर नजर डाली और उसने देखा कि पूरा जंगल हरे भरे पेड़ों से भरा हुआ है। मुझे इन्हें जल्दी से काट लेना चाहिए इनकी सुन्दर, मोटी लकड़ीयां बेच कर मैं खूब सारा पैसा कमाउंगा और ये कहते ही उसने अपनी कुल्हाड़ी उठाई सभी पेड़ों को उसने षाम होने तक काट गिराए। फिर लकड़हारे ने उस बदसूरत पेड़ की तरफ देखा और उसके पास बैठ कर खाना खाने लगा। सूखे पेड़ के नीचे एक सुन्दर सी बैठने की जगह थी तो लकड़हारा वहीं थोड़ी देर आराम करने के लिए लेट गया। लकड़हारा नींद से जागा और सभी कटे पेड़ों को लेकर गांव की ओर चल दिया। सूखे पेड़ के नीचे बचे हुए खाने की वजह से कई गिलहरी, चींटी और चिड़ियां आने लगी। कुछ सप्ताह बाद मानसून आया और बहुत अच्छी बारिश हुई। सूखे पेड़ को पानी मिलने से उसमें नई पत्तियां और टहनीयां आने लगी धीरे धीरे वो सूखा पेड़ भी हरा भरा हो गया। गर्मी की उस शाम लकड़हारे ने उस सूखे पेड़ को बेकार समझ कर छोड़ दिया जिस कारण समय आने पर मानसून की पहली बारिश में पेड़ हरा भरा हो गया। अपने आस पास कटे हुए पेड़ों को देखकर उसे बहुत दुख हुआ पर वो जानता था कि एक दिन सभी कटे हुए पेड़ बड़े हो जाएगे और फिर से पूरा जंगल हरा भरा हो जाएगा।

प्रेरणा चितारा

पशु से प्यार करना

राजस्थान में जयपुर जिले के तुलसीपुर नामक गांव में मीरा नाम की लड़की रहती थी। उसके माता-पिता का नाम अनिता देवी शर्मा और मोहन लाल शर्मा था। उस गांव में कुल 50 घर है। उन पचास घरों में से एक घर मीरा का भी है। मीरा 10वीं कक्षा में पढ़ती थी वैसे मीरा का पूरा नाम मीरा मोहनलाल शर्मा था। वे तीनों अपने परिवार में खुश थे। मीरा की मां घर का काम करती थी और मीरा के पिताजी मजदूर थे। मीरा के पिताजी बहुत अच्छे इंसान हैं वो सबकी बहुत मदद करते हैं। उनके घर में एक गाय थी जो कि बहुत अच्छी थी। वह किसी को भी मारती नहीं थी लेकिन मीरा उसके पास नहीं जा पाती थी क्योंकि उसे उसके विद्यालय के काम से फुर्सत ही नहीं मिलती थी।

फिर अचानक से देष में कोरोना वायरस नामक बीमारी आई जो बड़ी ही घातक बीमारी थी। इस बीमारी के धीरे-धीरे फैलने पर देश में लॉकडाउन लग गया। मीरा का विद्यालय बंद हो गया। उसके पिताजी का काम भी बंद हो गया फिर मीरा आराम से घर पर रहती और उसकी गाय का ध्यान रखती। उसने उसकी गाय का नाम मुनमुन रख दिया। वह मुनमुन को अपने बच्चे जैसे पालती थी। उसको समय पर नहलाती, खाना खिलाती और जहां पर भी मुनमुन रहती वह वहां साफ-सफाई करती और ऐसा करके उसे बहुत खुशी होती। लॉकडाउन में ऐसे उसका समय बीतता गया। वह अपनी गाय मुनमुन के साथ अच्छा समय बिताने लगी और दोनों खुशी-खुशी रहते थे।

शिक्षा - इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि जानवरों के साथ अच्छा व्यवहार करना चाहिए और उनके साथ समय बिताना चाहिए।

हिमांशी शर्मा

प्रकृति/पर्यावरण

प्रकृति/पर्यावरण

प्रकृति/पर्यावरण

प्रकृति/पर्यावरण

प्रकृति/पर्यावरण

मेरी रचना
कितनी सुंदर

प्रकृति/पर्यावरण

प्रकृति/पर्यावरण

कार्यशाला में प्रतिभागी बच्चों के नाम की सूची

अनुक्रमांक	नाम	संस्था का नाम
1	रूचिता प्रजापत	जन चेतना संस्थान
2	पार्थ बैरवा	जन चेतना संस्थान
3	तनुष्का	जन चेतना संस्थान
4	यशिका	जन चेतना संस्थान
5	ममता	जन चेतना संस्थान
6	अश्विन एरियल	महिला जन अधिकार संस्थान
7	मेहर बानो	महिला जन अधिकार संस्थान
8	प्रियंका मीणा	महिला जन अधिकार संस्थान
9	पिंकी गुर्जर	महिला जन अधिकार संस्थान
10	शीला बैरवा	महिला जन अधिकार संस्थान
11	नन्दिनी वैष्णव	महिला जन अधिकार संस्थान
12	गौरी सोनी	स्माईल लर्निंग सेन्टर
13	टीना वर्मा	स्माईल लर्निंग सेन्टर
14	शिवानी शर्मा	स्माईल लर्निंग सेन्टर
15	संजीता प्रजापत	स्माईल लर्निंग सेन्टर
16	सोनम कुशवाहा	स्माईल लर्निंग सेन्टर
17	निधी साहू	स्माईल लर्निंग सेन्टर
18	मिताली राज सोनी	स्माईल लर्निंग सेन्टर
19	डिंपल छीपा	स्माईल लर्निंग सेन्टर
20	तनु भास्कर	स्माईल लर्निंग सेन्टर
21	हीरा मेघवाल	शिव शिक्षा समिति
22	रातीराम भील	शिव शिक्षा समिति
23	भवानी लाल	शिव शिक्षा समिति
24	संगीता मेघवाल	शिव शिक्षा समिति

अनुक्रमांक	नाम	संस्था का नाम
25	दीक्षा प्रजापत	शिव शिक्षा समिति
26	मनीषा	शिव शिक्षा समिति
27	पूजा	शिव शिक्षा समिति
28	ललिता	उरमूल सीमांत समिति
29	टीना	उरमूल सीमांत समिति
30	अशोक घोडेला	उरमूल सीमांत समिति
31	राकेश	उरमूल सीमांत समिति
32	जेठाराम	उरमूल सीमांत समिति
33	विश्राम मीणा	एमिड संस्थान
34	ममता बैरवा	एमिड संस्थान
35	रेनू मीणा	एमिड संस्थान
36	दीपा	एमिड संस्थान
37	लवकुश मीणा	एमिड संस्थान
38	सरीता बैरवा	एमिड संस्थान
39	धनराज सैनी	एमिड संस्थान
40	मनप्रीत	एमिड संस्थान
41	पठान खां	दूसरा दशक बाप
42	प्रकाश	दूसरा दशक बाप
43	मंजू	दूसरा दशक बाप
44	शोभानु भारती	दूसरा दशक बाप
45	नखताराम	दूसरा दशक बाप
46	रमेश	दूसरा दशक बाप
47	उम्मेदराम	दूसरा दशक बाप
48	मंजू	दूसरा दशक बाप

अनुक्रमांक	नाम	संस्था का नाम
49	देवांशु	डांग विकास संस्थान
50	सूरजभान	डांग विकास संस्थान
51	शकेन्द्र	डांग विकास संस्थान
52	वीणा	डांग विकास संस्थान
53	चंद्रेश	डांग विकास संस्थान
54	रिंकू	डांग विकास संस्थान
55	उमेश कुमार	डांग विकास संस्थान
56	गुड्डी चरपोटा	गायत्री सेवा संस्थान
57	वंदना मेघवाल	गायत्री सेवा संस्थान
58	लच्छीया कुमारी मीणा	गायत्री सेवा संस्थान
59	लाली निनामा	गायत्री सेवा संस्थान
60	शंकर मीणा	गायत्री सेवा संस्थान
61	कांकू मीणा	गायत्री सेवा संस्थान
62	दुर्गा गायरी	राजसमन्द जन विकास संस्थान
63	रूकसाना बानो	राजसमन्द जन विकास संस्थान
64	संतोष कुंवर	राजसमन्द जन विकास संस्थान
65	गायत्री खटीक	राजसमन्द जन विकास संस्थान
66	सीमा भाटी	दूसरा दशक बाली
67	प्रीति रावल	दूसरा दशक बाली
68	यशपाल कुमावत	दूसरा दशक बाली
69	ईशान रावल	दूसरा दशक बाली
70	रेणुका भाटी	दूसरा दशक बाली
71	विकास बैरवा	दूसरा दशक बस्सी
72	खुशबु सैन	दूसरा दशक बस्सी

अनुक्रमांक	नाम	संस्था का नाम
73	विजय प्रजापत	दूसरा दशक बस्सी
74	अजय बैरवा	दूसरा दशक बस्सी
75	दिनेश बैरवा	दूसरा दशक बस्सी
76	श्योजी बैरवा	दूसरा दशक बस्सी
77	ज्योति पिंगोलिया	दूसरा दशक बस्सी
78	रीना शर्मा	दूसरा दशक बस्सी
79	नरेन्द्र पिंगोलिया	दूसरा दशक बस्सी
80	प्रभजय नागरवाल	दूसरा दशक बस्सी
81	विशाल बैरवा	दूसरा दशक बस्सी
82	अंकेश वर्मा	भंवरगढ़
83	विकास वर्मा	भंवरगढ़
84	अशोक वर्मा	भंवरगढ़
85	मनोज वर्मा	भंवरगढ़
86	दौलतराम	भंवरगढ़
87	देवांश सहरिया	भंवरगढ़
88	सलोनी ठाकुर	भंवरगढ़
89	पूजा कुमारी	दूसरा दशक देसूरी
90	रवीना कुमारी	दूसरा दशक देसूरी
91	रंजन कुमारी	दूसरा दशक देसूरी
92	पवनी कुमारी	दूसरा दशक देसूरी
93	गायत्री	दूसरा दशक देसूरी
94	मुस्कान शेख	ग्रामीण मानव कल्याण शिक्षण संस्थान -काचरोदा
95	इरफान शेख	ग्रामीण मानव कल्याण शिक्षण संस्थान -काचरोदा
96	हर्षिता मीणा	ग्रामीण मानव कल्याण शिक्षण संस्थान -काचरोदा

अनुक्रमांक	नाम	संस्था का नाम
97	हिमांशु तंवर	ग्रामीण मानव कल्याण शिक्षण संस्थान -काचरोदा
98	रोहन प्रजापत	ग्रामीण मानव कल्याण शिक्षण संस्थान -काचरोदा
99	हरि सिंह	ग्रामीण मानव कल्याण शिक्षण संस्थान -काचरोदा
100	अक्षिता	आर.आई.एच.आर.
101	निवेदिता	आर.आई.एच.आर.
102	खुशबु यादव	आर.आई.एच.आर.
103	नगीना यादव	आर.आई.एच.आर.
104	अनीशा	आर.आई.एच.आर.
105	रेनू मेघवंशी	अंताक्षरी
106	आषीष मेघवंशी	अंताक्षरी
107	रोशन बैरवा	अंताक्षरी
108	पूजा चौधरी	अंताक्षरी
109	मोहित बिजीराणीया	अंताक्षरी
110	पूजा चौधरी	अंताक्षरी
111	प्रियंका भंवरीया	अंताक्षरी
112	मनीषा चौधरी	अंताक्षरी
113	मुकेश कुमार चौधरी	अंताक्षरी
114	विजय बिजारणिया	अंताक्षरी
115	हिमांशी शर्मा	ग्राम चेतना केंद्र जयपुर
116	परिक्षित खंडल	ग्राम चेतना केंद्र जयपुर
117	चेतन प्रकाश यादव	ग्राम चेतना केंद्र जयपुर
118	अनिता यादव	ग्राम चेतना केंद्र जयपुर
119	यतेन्द्र यादव	ग्राम चेतना केंद्र जयपुर
120	मनीषा सैन	ग्राम चेतना केंद्र जयपुर

अनुक्रमांक	नाम	संस्था का नाम
121	विशाल यादव	ग्राम चेतना केंद्र जयपुर
122	हर्षिता यादव	ग्राम चेतना केंद्र जयपुर
123	गौरव शर्मा	शिक्षत रोजगार केंद्र प्रबंधक समिति, झुंझुनू
124	हेमलता	शिक्षत रोजगार केंद्र प्रबंधक समिति, झुंझुनू
125	नितिन कुमार	शिक्षत रोजगार केंद्र प्रबंधक समिति, झुंझुनू
126	राहुल सैनी	शिक्षत रोजगार केंद्र प्रबंधक समिति, झुंझुनू
127	प्रियंका	शिक्षत रोजगार केंद्र प्रबंधक समिति, झुंझुनू
128	मनीषा बैरवा	शिव शिक्षा समिति,टोंक
129	ऋषभ षर्मा	शिव शिक्षा समिति,टोंक
130	पार्वती	शिव शिक्षा समिति,टोंक
131	भावना चौधरी	शिव शिक्षा समिति,टोंक
132	दीपक इरवाल	शिव शिक्षा समिति,टोंक
133	सोनू बैरवा	शिव शिक्षा समिति,टोंक
134	दीपक वैष्णव	शिव शिक्षा समिति,टोंक
135	शिवानी बैरवा	शिव शिक्षा समिति,टोंक
136	मनीषा बैरवा	शिव शिक्षा समिति,टोंक
137	गिरिजा योगी	शिव शिक्षा समिति,टोंक
138	रवीना बैरवा	शिव शिक्षा समिति,टोंक
139	मोहित सिंह	सतत विकास संस्थान,पाली
140	भूमिका कंवर	उरमूल सीमांत समिति,बज्जू
141	विश्वजीत सिंह	उरमूल सीमांत समिति,बज्जू
142	गज़ल	उरमूल सीमांत समिति,बज्जू
143	मिलन	उरमूल सीमांत समिति,बज्जू
144	नैना	एमिड अलवर

अनुक्रमांक	नाम	संस्था का नाम
145	मदीना	एमिड अलवर
146	कंचन	एमिड अलवर
147	बलविन्दर	एमिड अलवर
148	मेमन	एमिड अलवर
149	पिंकी	एमिड अलवर
150	वसीम खान	एमिड अलवर
151	मेनिका	एमिड अलवर
152	आरती	जन चेतना केंद्र, आबू रोड
153	अनिता	जन चेतना केंद्र, आबू रोड
154	सरोज	जन चेतना केंद्र, आबू रोड
155	ध्रुवी	जन चेतना केंद्र, आबू रोड
156	आनिया	जन चेतना केंद्र, आबू रोड
157	सिद्धि बैरवा	जन चेतना केंद्र, आबू रोड
158	रोदू राव	लोक विकास संस्थान, सरवाड़
159	रोशनी कुमारी	लोक विकास संस्थान, सरवाड़
160	भूमिका कुमारी	लोक विकास संस्थान, सरवाड़
161	प्रिंस जांगिड़	लोक विकास संस्थान, सरवाड़
162	कनक	लोक विकास संस्थान, सरवाड़
163	कार्तिक	लोक विकास संस्थान, सरवाड़
164	सुहानी	लोक विकास संस्थान, सरवाड़
165	धीरज	लोक विकास संस्थान, सरवाड़
166	मूमल चितारा	विकल्प, उदयपुर
167	कोमल चौहान	विकल्प, उदयपुर
168	शालिनी चितारा	विकल्प, उदयपुर

अनुक्रमांक	नाम	संस्था का नाम
169	दीपिका प्रजापत	विकल्प, उदयपुर
170	नीतू सुथार	विकल्प, उदयपुर
171	लक्ष्मी तेली	विकल्प, उदयपुर
172	जूही तेली	विकल्प, उदयपुर
173	कोमल मेघवाल	विकल्प, उदयपुर
174	अशोक गमेती	विकल्प, उदयपुर
175	पल्लवी शर्मा	विकल्प, उदयपुर
176	दीपक शर्मा	विकल्प, उदयपुर
177	लक्षिता मेघवाल	विकल्प, उदयपुर
178	पूजा मेघवाल	विकल्प, उदयपुर
179	शादिया बानो	विकल्प, उदयपुर
180	कोमल हरिजन	विकल्प, उदयपुर
181	केसर लोहार	विकल्प, उदयपुर
182	ललिता लोहार	विकल्प, उदयपुर
183	मुस्कान बानो	विकल्प, उदयपुर
184	अंजली यादव	विकल्प, उदयपुर
185	शिवानी यादव	विकल्प, उदयपुर

जन चेतना संस्थान
आबू रोड

महिला जन अधिकार संस्थान
अजमेर

स्माईल लर्निंग सेन्टर
जयपुर

शिव शिक्षा समिति
टोंक

उरमूल सीमांत समिति
बीकानेर

एमिड संस्थान
अलवर

शिक्षित रोजगार केंद्र
प्रबंधक समिति, झुंझुनू

डांग विकास संस्थान

गायत्री सेवा संस्थान

राजसमन्द
जन विकास संस्थान
राजसमन्द

आर.आई.एच.आर.
जयपुर

ग्रामीण मानव कल्याण
शिक्षण संस्थान-काचरोदा
जयपुर

अंताक्षरी
अजमेर

ग्राम चेतना केंद्र जयपुर

दूसरा दशक परियोजना
बाप-जयपुर, भंवरगढ़-बारां, देसुरी-पाली, बाली-पाली, बस्ती-जयपुर

राजस्थान बाल अधिकार संरक्षण साझा अभियान की पहल

"दशम एलाइंस"

रिसोर्स इंस्टिट्यूट फॉर ह्यूमन राइट्स, राजस्थान
९३२, किसान मार्ग, बरकत नगर, टोंक रोड, जयपुर
E-mail ID : rihar.rajasthan@gmail.com
संपर्क - 0141-3532799, 9460387130, 7878055137